ISSN 2394-8485

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

फौष-माघ, संवत् नानकशाही ५५०

वर्ष १२ अंक ५ जनवरी 2019

मुख्य संपादक : सिमरजीत सिंघ
संपादक : सतविंदर सिंघ फूलपुर
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता

सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर साहिब-१४३००६
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादकीय विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार	४
संपादकीय	५
देर से ही सही, चलो, कुछ तो इंसाफ मिला	७
इंकलाबी रहबर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी	८
-डॉ. रूप सिंघ	
श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की महिमा	१०
-स. गुरदीप सिंघ	
हम इह काज जगत मो आए	१२
-स. हरचरन सिंघ	
मानव अधिकारों के प्रतीक श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी	१५
-डॉ. प्रदीप शर्मा 'स्नेही'	
श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी	१८
-स. रविंदर सिंघ	
श्री गुरु नानक देव जी की बाणी जपु जी साहिब	२०
-डॉ. जगजीत कौर	
गुरु साहिबान की बाणी में विदित और उपदेशित संस्कृति	२४
-डॉ. हरनाम सिंघ शान	
श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की छंद-शास्त्र को उत्कृष्ट देन	३५
-स. निरवैर सिंघ अरशी	
गुरबाणी के अनुसार सुखी जीवन की प्राप्ति	३७
-डॉ. बेअंत सिंघ शीतल	
प्रार्थना (कविता)	३९
-प्रो. शाम लाल कौशल	
अद्भुत शहीदी की रौशन मशाल-- बाबा दीप सिंघ जी	४०
-डॉ. सत्येंद्र पाल सिंघ	
श्री मुकतसर साहिब के ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान	४५
-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'	
असहयोग की अद्भुत मिसाल : चाबियों का मोर्चा	४७
-डॉ. राजेंद्र सिंघ साहिल	
ख़बरनामा	४९

Final

गुरबाणी विचार

माघि मजनु संगि साधूआ धूड़ी करि इसनानु ॥
हरि का नामु धिआइ सुणि सभना नो करि दानु ॥
जनम करम मलु उतरै मन ते जाइ गुमानु ॥
कामि करोधि न मोहीऐ बिनसै लोभु सुआनु ॥
सचै मारगि चलदिआ उसतति करे जहानु ॥
अठसठि तीरथ सगल पुंन जीअ दइआ परवानु ॥
जिस नो देवै दइआ करि सोई पुरखु सुजानु ॥
जिना मिलिआ प्रभु आपणा नानक तिन कुरबानु ॥
माघि सुचे से कांढीअहि जिन पूरा गुरु मिहरवानु ॥ *(पन्ना १३५)*

पंचम गुरु श्री गुरु अरजन देव जी महाराज बारह माहा मांझ की इस पावन पउड़ी में प्राचीन काल से चली आ रही माघ महीने में तीर्थ-स्नान की परंपरा की पृष्ठभूमि में मनुष्य-मात्र को परमात्मा के सच्चे नाम-सिमरन का सहारा लेते हुए वास्तविक आत्मिक विकास का गुरमति महामार्ग बख़्शिश करते हैं।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि हे मनुष्य-मात्र! तेरे लिए वास्तविक लाभ लेने का रास्ता यही है कि माघ के महीने में तू नेक जनों-- गुरमुखों की संगत कर। उनसे मिलकर प्रभु-नाम के महत्त्व पर विचार कर। तू गुरमुखों के साथ परमात्मा के नाम की स्तुति रूपी धूल का स्पर्श कर। यही तेरा स्नान है। तू माघ माह में परमात्मा का नाम स्मरण कर और यह अपने तक ही सीमित न रख। इस दात अथवा ऊंची वस्तु को आगे भी वितरित कर। यहां समझने योग्य विचार-बिंदु यह है कि गुरमति में अकेले में प्रभु-नाम-चिंतन करने की बजाय संगत में जाकर चिंतन-मनन करने का अधिक महत्त्व माना जाता है।

सतिगुरु पातशाह कथन करते हैं कि यह ऐसा कारगर ढंग है कि इससे मन पर चढ़ी कई जन्मों में किए दुष्कर्मों की मैल उतर जाएगी और तेरे मन से अहंकार चला जाएगा। काम और क्रोध के नुकसानदेय विकारी भाव तुझ पर भारी नहीं रहेंगे। न ही मोह तंग करेगा और लालच रूपी कुत्ता भी तुझे दर-दर नहीं भटकाएगा। सच्चे मार्ग पर चलने से तेरा अपना आत्मिक लाभ तो है ही, संसार भी तेरी शोभा करेगा। अठसठ तीर्थों के स्नान से प्राप्त किए जाने वाले जो पुन्य गणना में आते हैं वे जीवों पर दया-भाव प्रकट करने से स्वत: मिल जाते हैं अर्थात् माघ महीने में ऐ मनुष्य! तुझे हिंसक व्यवहार को छोड़ना होगा।

सतिगुरु जी फरमान करते हैं कि जिस मनुष्य को नेक-जनों की संगत प्रभु स्वयं प्रदान कर देता है वह मनुष्य वास्तव में बुद्धिमान है। जिनको अपना मूल स्रोत परमात्मा मिल गया, मैं उन पर सदके जाता हूं। माघ महीने में जिन पर पूरा गुरु कृपालु होता है वे भाग्यशाली लोग मात्र बाहरी स्नान से नहीं, बल्कि रूहानी स्नान करने से स्वच्छ होते हैं।

Final

संपादकीय

अगर न होते गुरु गोबिंद सिंघ . . .

श्री गुरु नानक पातशाह जी के आगमन के समय के हालात पर नज़र मारें तो उस समय का भारतीय समाज हर मुकाम पर छिन्न-भिन्न था। उस समय के समाज में फैली नफ़रत और झगड़े का मुख्य कारण भारतीय बहुसंख्यक के एक विशेष वर्ग द्वारा लोगों में वर्ण-विभाजन के माध्यम से डाली हुई ऊंच-नीच और छुआ-छूत की दरारें थीं। इसी भारतीय जाति-विभाजन ने समाज की शक्ति को कमज़ोर बना दिया था, जिस कारण देश हज़ारों साल विदेशियों का गुलाम रहा। विदेशी हमलावरों ने इस देश में से जहां बेतहाशा धन-दौलत लूटा, वहीं भारतीय बहू-बेटियों की आबरू को भी जी भर कर बेइज़्ज़त किया। ऐसे हालात में मर्द-ए-कामिल श्री गुरु नानक पातशाह जी का प्रकाश हुआ, जिस बाबत डॉ. मुहम्मद इकबाल ने लिखा है :

फिर उठी आखिर सदा तौहीद की पंजाब से। हिंद को एक मर्द-ए-कामिल ने जगाया ख्वाब से।

श्री गुरु नानक पातशाह जी ने देश की शक्ति को मज़बूत करने के लिए लोगों में प्रेम, मोहब्बत, सांझीवालता और मानवीय भाईचारा पैदा किया। बाकी गुरु साहिबान ने इस सर्वसांझीवालता के मिशन को आगे बढ़ाया।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने 'नानक निर्मल पंथ' के मिशन को 'खालसा पंथ' के रूप में संपूर्ण किया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बाणी में मानवीय प्रेम, भाईचारे और सद्भावना का भरपूर शब्दों में वर्णन मिलता है। अकाल पुरख द्वारा सृजित सर्वसांझीवालता के मिशन की स्थापि में यदि ज़ालिम ताक़तों ने रुकावट खड़ी की, तो श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को शस्त्रबद्ध संघर्ष भी करना पड़ा। बेशक भारतीय बहुसंख्या के नुमाइंदे पहाड़ी राजाओं ने ज़ालिम मुगल हकूमत के साथ मिलकर गुरु साहिब के मानवतावादी मिशन को नाकाम करने की नापाक कोशिशें कीं, परंतु गुरु साहिब के रूहानी मिशन को तो अकाल पुरख की नवाज़िश हासिल थी। गुरु साहिब ने अपने दैवी मिशन को साकार करने के लिए अपना सरवंश कुर्बान कर दिया। गुरु साहिब के बाद इस मानवतावादी रूहानी मिशन को 'खालसा पंथ' ने आगे बढ़ाया। बाबा बंदा सिंघ बहादुर द्वारा जुल्म के विरुद्ध संघर्ष कर गुरु साहिबान के आदर्श *"सभ सुखाली वुठीआ"* वाले विनम्र सिक्ख राज्य की स्थापना की और शहादत भी दी। बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शहादत से लेकर १९४७ ई के देश-विभाजन तक सिक्खों की देश, कौम और मानवता के लिए दी कुर्बानियों की लंबी फिहरिस्त है, जिसमें सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया, सरदार बघेल सिंघ, नवाब कपूर सिंघ, बाबा दीप सिंघ जी, सरदार हरी सिंघ नलवा, सरदार शाम सिंघ अटारी और गदरी बाबे आदि बहुत-से जांबाज़ गुरसिक्खों के नाम हैं। भारत का इतिहास लिखते समय इन सभी का नाम सुनहरी अक्षरों में लिखा जाना चाहिए था। मगर लिखे कौन? लिखना तो दूर की बात, आज भारत के इतिहास में अपने योगदान की तुच्छता के कारण पैदा हुई हीन भावना का सदका लासानी सिक्ख इतिहास के साथ छेड़छाड़ करने और शैक्षणिक पाठ्यक्रम में से खत्म करने की कोशिशें की जा रही हैं।

हमारा सभी का फर्ज़ बनता है कि हम श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बख़्शिशों की खातिर सृजित किए गए लासानी सिक्ख इतिहास को अपनी आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाने के लिए खुद प्रयास करें। जहां हमने अपने बच्चों को ऊंची दुनियावी विद्या दिलानी है, वहीं अपने बच्चों को गुरबाणी और गुरु-इतिहास से परिचित करवाने को भी अपना प्रारंभिक फर्ज़ समझना है।

जहां गुरु साहिबान जीवन भर मानवता में फैली नफ़रत को मिटाने के लिए संघर्ष करते रहे, वहीं देश की आज़ादी के बाद एक नई किस्म की नफ़रत सत्ता भोगने वालों के अंदर पैदा हो गई। वह नफ़रत थी-- आज़ादी के लिए योगदान देने वाले लोगों के आंकड़ों को इतिहास में कम दर्शाना। दुनिया ने आंकड़े देख

Final

कर दांतों तले उंगलियां दबा लीं। यह क्या? अस्सी प्रतिशत संख्या वालों की कुर्बानियां दस प्रतिशत? दो प्रतिशत संख्या वालों की कुर्बानियां अस्सी प्रतिशत? यदि मन में इंसाफ करने का मादा हो तो सिक्खों की इन सभी प्राप्तियों को एक ही लाइन में समेटा जा सकता है, परंतु उस लाइन को स्वीकार करना पड़ेगा। वह लाइन है :
इंसाफ करे जी में ज़माना तो यकीं है। कह दे गुरु गोबिंद का सानी ही नहीं है।

क्योंकि सरवंशदानी कलगीधर पिता के खंडे-बाटे के अमृत की शक्ति ही ऐसी थी जिसने खालसा पंथ में *"सवा लाख से एक लड़ाऊं"* वाला बल पैदा किया था। हर जगह संख्या की ही बात नहीं होती। हज़ारों भेड़ों के झुंड को एक ही शेर आगे लगा कर भगा सकता है। यह कलगीधर पिता जी के खंडे-बाटे के अमृत की शक्ति ही थी, जिस कारण सिक्खों ने बढ़-चढ़ कर देश-कौम के लिए कुर्बानियां दीं और हज़ारों साल की गुलामी के बाद भारतवासियों को आज़ादी का आनंद दिलाया। देश की आज़ादी के बाद अब तक का इकहत्तर वर्षों का इतिहास भी हमारे सामने है, जिसमें सत्ताधारियों की नफ़रत ने देश को बेरोज़गारी, भुखमरी, भ्रष्टाचारी, खुदगर्ज़ी के अलावा और कुछ नहीं दिया, क्योंकि सारा ज़ोर तो अल्पसंख्यकों के प्रति दमनकारी नीतियों में लगा हुआ है। देश की आज़ादी के बाद बहुसंख्यक सत्ताधारियों ने गुरु के एक सिक्ख रौशन-दिमाग सिरदार कपूर सिंघ का जो हश्र किया, उसके बारे में 'साची साखी' पुस्तक में से और ज्यादा विस्तार सहित पढ़ा जा सकता है। ऐसे दूर-अंदेश, रौशन-दिमाग व्यक्ति से देश की तरक्की के लिए भरपूर सहयोग लिया जा सकता था। मगर लेना किसने था? मसला तो यह था कि दो प्रतिशत आबादी वालों में से कोई इतना बुद्धिमान व्यक्ति पैदा क्यों हो गया? जिस पंजाबी क्षेत्र में से महान क्रांति ने जन्म लिया था, उस क्षेत्र को शारीरिक और मानसिक रूप से कमज़ोर बनाने की कई प्रकार की योजनाबंदी भी की गई।

आज उस स्वाभिमानी कौम, जिसने असंख्य कुर्बानियां देकर देश को आज़ाद करवाया, को आतंकवादी साबित करने की चालें सोची-समझी साजिश के अंतर्गत हो रही हैं। कहीं भी कोई घटना घटे, बिना छानबीन के इलज़ाम सिक्खों के सिर मढ़ कर सिक्ख नौजवानों की गिरफ्तारी शुरू कर दी जाती है।

सिक्खों की लंबे समय से अरदासों का सदका या यदि गुरुद्वारा श्री करतारपुर साहिब का रास्ता खोलने की बात चली है तो भारतीय मीडिया ने एड़ियां उठा-उठा कर जो ज़हर उगला है, उससे इनके मन के अंदर सिक्खों के प्रति भरी नफ़रत साफ़ ज़ाहिर होती है।

सिक्खों के प्रति ऐसा नफ़रत भरा व्यवहार रखने वालों को भारतीय तवारीख के संदर्भ में बुल्ले शाह के ये शब्द ज़रूर पढ़ लेने चाहिए :
न कहूं जब की, न कहूं तब की, बात कहूं मैं अब की।
अगर न होते गुरु गोबिंद सिंघ, सुन्नत होती सब की।

यदि सिक्खों के दसवें गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी देश-धर्म के लिए अपना पूरा परिवार कुर्बान न करते, खालसा पंथ की सृजना न करते, भारतीय तवारीख में सिक्ख संघर्ष का ज़िक्र न होता, तो आज भारत का नक्शा कुछ और ही होना था। आज दूसरों के अस्तित्व को चढ़दी कला में देख कर नफरत करने वालों का अपना अस्तित्व भी नहीं होना था। इससे संबंधित महाकवि भाई संतोख सिंघ की पंक्तियां ज़रूर पढ़ लेनी चाहिए :
छाए जाती एकता अनेकता बिलाए जाती, होवती कुचीलता कतेबन कुरान की।
पाप ही प्रपक्क जाते धरम धसक जाते, बरन गरक जाते साहित बिधान की।
देवी देव देहुरे संतोख सिंघ दूर होते, रीत मिट जाती कथा बेदन पुरान की।
श्री गुरू गोबिंद सिंघ पावन परम सूर, मूरत न होती जउ पै करुणा निधान की।

सतविंदर सिंघ फूलपुर
फोन : +९१९९१४४-१९४८४

Final

देर से ही सही, चलो, कुछ तो इंसाफ मिला

नवंबर, १९८४ ई में दिल्ली सहित भारत के अन्य बड़े शहरों में सिक्खों का बड़े स्तर पर कत्ल-ए-आम किया गया। यह नसलकुशी आज़ाद भारत में सबसे बड़ा नरसंहार था। इसका सबसे दुखदायी पहलू यह था कि यह कत्ल-ए-आम अपने ही देश की तत्कालीन सरकार द्वारा करवाया गया था, जबकि सरकारों की जिम्मेदारी अपने देश के बाशिंदों की जान-माल की सुरक्षा करना होता है। प्रमुख राजनीतिक नेताओं द्वारा अलग-अलग इलाकों में खुद भीड़ का नेतृत्व कर सिक्खों को मारा गया; गले में टायर डाल कर ज़िंदा जलाया गया; सिक्खों के घर-जायदाद आदि को लूट कर आग लगा दी गई; गुरुद्वारा साहिबान की इमारतों को भी जलाया गया।

१९४७ ई के बाद पहले सिक्खों की बुनियादी मांगों को मानने से इनकारी होकर कांग्रेस सरकार द्वारा सिक्खों को देश के अंदर बेगानेपन का एहसास तो पहले से ही करवाया जा रहा था। फिर जून, १९८४ ई में श्री अकाल तख़्त साहिब पर हमला कर और नवंबर, १९८४ ई में सिक्ख कत्लेआम करवाकर तथा बाद में दोषियों की पीठ थपथपा कर उनको सरकार में ऊंचे रुतबे प्रदान करते हुए उनको संरक्षण देकर सिक्खों को लगातार बेगानेपन का एहसास करवाया गया। ३४ साल तक न्याय का इंतज़ार करते-करते सिक्खों का एक बार तो भारतीय न्याय-प्रणाली से विश्वास ही उठ गया था।

दिल्ली की पटियाला हाऊस अदालत द्वारा २० नवंबर, २०१८ ई को सिक्ख कत्ल-ए-आम के एक मामले, जिसमें दो सिक्खों-- स. अवतार सिंघ और स. हरदेव सिंघ के गले में टायर डाल आग लगा कर उनको घर की छत से नीचे फेंक दिया था, के दो दोषियों-- यशपाल सिंह को फांसी और नरेश सहरावत को उम्र-कैद की सज़ा सुनाई गई।

१७ दिसंबर, २०१८ ई को दिल्ली के वकील स. हरविंदर सिंघ फूलका की कानूनी सेवाओं का सदका दिल्ली हाईकोर्ट के दो जजों-- जस्टिस एस. मुरलीधर और जस्टिस विनोद गोयल ने दिल्ली की पालम कालोनी के राज नगर इलाके में पांच सिक्खों-- स. केहर सिंघ, स. गुरप्रीत सिंघ, स. रघविंदर सिंघ, स. नरिंदर सिंघ और स. कुलदीप सिंघ की हत्या के केस में सज्जन कुमार तथा उसके तीन साथियों-- कैप्टन भागमल, गिरधारी लाल और बलवान खोखर को उम्र-कैद तथा दो अन्य साथियों-- महेंद्र यादव और किशन खोखर को १०-१० साल की सज़ा सुनाने से लंबे इंतज़ार के बाद सिक्खों के हृदय को कुछ राहत मिली है; भारतीय न्याय-प्रणाली में विश्वास बंधा है।

एक बड़े लोकतंत्र में इतने बड़े कत्ल-ए-आम के लिए जो ३४ सालों की देरी हुई है, वह भी नहीं होनी चाहिए थी। ये सज़ाएं सिक्ख कौम को अपने ही देश की सरकार द्वारा दिए ज़ख़्मों को पूरी तरह से तो नहीं भर सकती, परंतु इससे कुछ राहत अवश्य मिली है। सिक्ख जगत की मांग है कि अदालत इसी तरह अन्य दोषियों को भी सख़्त से सख़्त सज़ा दे, जिससे सिक्ख कौम को इंसाफ मिल सके।

सतविंदर सिंघ फूलपुर

Final

इंकलाबी रहबर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी

*-डॉ रूप सिंघ**

बहुपक्षी शख़्सियत के मालिक श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महान इंकलाबी योद्धा हुए हैं, जिन्होंने सदियों से जब्र-जुल्म तले दबे-कुचले हिंदोस्तानी समाज में नई रूह फूंकी और लोगों के मन में से हकूमती जब्र का सहम दूर करने के लिए तैयार-बर-तैयार हथियारबंद खालसा पंथ की सृजना की। उन्होंने हिंदोस्तानी लोगों की सोई हुई आत्मा को जगाया और इज्जत एवं स्वाभिमान के साथ ज़िंदगी जीने के लिए प्रेरित किया :

जे जीवै पति लथी जाइ ॥
सभु हराम जेता किछु खाइ ॥ *(पन्ना १४२)*

गुरु जी को एक तरफ कट्टर मुगल हकूमत और दूसरी तरफ लोभी, कर्मकांडी, धार्मिक परंपराओं के धारक एवं जात-पात व वर्ण-विभाजन के आधार पर बंटी जमात के साथ-साथ पहाड़ी राजाओं की ईर्ष्या का संताप भी हंडाना पड़ा। समाज-विरोधी ताकतों का मुकाबला करने के लिए गुरु जी को जीवन भर संघर्ष करना पड़ा।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जीवन-उद्देश्य सत्य-धर्म की स्थापना, मज़लूमों और कमज़ोरों की रक्षा तथा हर तरह के जब्र-जुल्म का मुकाबला करना था। उन्होंने जान लिया था कि समाज के पतन या अधर्म के बोलबाले का मुख्य कारण लोगों की गुलाम मानसिकता है। उनके द्वारा धर्म-युद्ध करने का उद्देश्य लोगों के साथ हो रहे जब्र-जुल्म और धक्केशाही को रोकना था। धर्म की स्थापना, अच्छे लोगों की रक्षा और दुष्टों का नाश करने के अपने जीवन-उद्देश्य को आप 'बचित्र नाटक' में भली-भांति स्पष्ट करते हैं :

हम इह काज जगत मो आए ॥
धरम हेत गुरदेव पठाए ॥
जहां तहां तुम धरम बिथारो ॥
दुसट दोखीअनि पकरि पछारो ॥४२॥ . . .
धरम चलावन संत उबारन ॥
दुसट सभन को मूल उपारन ॥४३॥

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने तथाकथित धार्मिक लोगों द्वारा किए जा रहे पाखंडों का खूब राज़ खोला। अपनी बाणी में उन्होंने इन पाखंडों और कर्म-कांडों की निषिद्धता करते हुए लोगों को खालिस जीवन के धारक होने के लिए प्रेरित किया। आप जी अपनी बाणी में बताते हैं कि मूर्ति-पूजा, तीर्थ-यात्रा या बगुल समाधियों द्वारा अकाल पुरख की प्राप्ति नहीं हो सकती। कहने से तात्पर्य, गुरु जी ने प्रचलित तथाकथित धार्मिक विश्वासों का खंडन बेखौफ होकर किया और लोगों को सत्य के मार्ग के धारक होने के लिए प्रेरित किया :

कहा भयो जो दोऊ लोचन मूंद कै
बैठि रहिओ बक धिआन लगाइओ ॥
न्हात फिरिओ लीए सात समुद्रनि
लोक गयो परलोक गवाइओ ॥
बास कीओ बिखिआन सो बैठ कै
ऐसे ही ऐसे सु बैस बिताइओ ॥
साचु कहों सुन लेहु सभै
जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइओ ॥९॥२॥
(अकाल उसतत)

**मुख्य सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर साहिब, फोन : ९८१४६-३७९७९*

Final

आज की दुनिया मानवीय अधिकारों और मानवीय सम्मान की बहाली के लिए प्रयत्न कर रही है। धन्य हैं श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी, जिन्होंने आज से तीन सदियां पहले यह एलान कर दिया था कि समूची मानवता में एक अकाल पुरख की ज्योति काम कर रही है। सभी एक ही मिट्टी के बने हुए हैं, इसलिए हिंदू, मुसलमान, योगी आदि सांप्रदायिकता के आधार पर मानवता को बांटना जायज नहीं। मानवता को एक इकाई मानते हुए सबको उसी का स्वरूप समझना चाहिए :

कोऊ भइओ मुंडीआ संनिआसी कोऊ जोगी भइओ
कोऊ ब्रहमचारी कोऊ जती अनुमानबो ॥
हिंदू तुरक कोऊ राफजी इमाम सापी
मानस की जात सबै एकै पहिचानबो ॥
करता करीम सोई राजक रहीम ओई
दूसरो न भेद कोई भूल भ्रम मानबो ॥
एक ही की सेव सभ ही को गुरदेव एक
एक ही सरूप सबै एकै जोत जानबो ॥१५॥८५॥
(अकाल उसतत)

सबसे बड़ी इंकलाबी बात गुरु साहिब ने यह की कि उन्होंने दबे-कुचले लोगों, गरीब कामगारों और कमज़ोरों को गले लगाया। सदियों से गुलामी और जहालत की ज़िंदगी जी रहे लोगों में आत्म-सम्मान की भावना को जगा दिया। यही लोग गुरु-कृपा के पात्र बनकर खालसा सजे और गुरु-नज़रों में प्रवान चढ़े। गुरु जी इनके किरदार, व्यवहार और आचार पर तसल्ली प्रकट करते हुए फरमान करते हैं :

इनही की क्रिपा के सजे हम हैं
नही मोसो गरीब करोर परे ॥
(सवैये पातशाही १०)

दुनिया के इतिहास में यह एक बड़ा इंकलाब माना जाएगा कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने पैरोकारों को अपने बराबर का दर्जा दिया। दुनिया के किसी भी धार्मिक रहबर ने अपने पैरोकारों को बराबरी का रुतबा नहीं दिया। यह एक ऐतिहासिक सच्चाई है कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा प्रकट कर गुरु-दीक्षा का अधिकार भी गुरु-पंथ को सौंप दिया। आप खालसे को अपना रूप स्वीकार करते हुए फरमान करते हैं :

खालसा मेरो रूप है खास।
खालसे मै हउ करउ निवास। . . .
खालसा मेरो सतिगुर पूरा।
खालसा मेरो सजण सूरा।

दुनिया के दूसरे धार्मिक रहबरों की तरह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने आप को परमात्मा नहीं कहलवाया, अपना नाम नहीं जपवाया और न ही अपने नाम का धर्म चलाया। अपने आपको अकाल पुरख वाहिगुरु का दास, सेवक बताते हुए उन्होंने बहुत सख़्त हिदायत की कि मुझे परमात्मा नहीं कहना :

जो हम को परमेसर उचरिहैं ॥
ते सभ नरक कुंड महि परिहैं ॥
मो कौ दास तवन का जानो ॥
या मै भेद न रंच पछानो ॥३२॥ (बचित्र नाटक)

इस तरह श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी संसार के इतिहास में इंकलाबी रहबर हुए हैं जिन्होंने लोगों की जिंदगी में इंकलाबी और ऐतिहासिक परिवर्तन किया। आज के देहधारी गुरुओं, तथाकथित साधु-संतों और महात्माओं को दसम् गुरु जी के जीवन से प्रेरणा लेकर बाहरी भेस, आडंबर एवं दिखावे का त्याग करना चाहिए तथा लोगों को अंधविश्वासों, वहमों-भ्रमों, कर्म-कांडों के अंधकार में डालने से गुरेज करना चाहिए। गुरदेव पिता जी द्वारा दिए नारे— 'पूजा अकाल की, परचा शबद का, दीदार खालसे का' के धारक बन, भ्रम-भेस से स्वतंत्र होकर गुरु के सुपुत्र होने में फख्र महसूस करना चाहिए।

Final

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की महिमा

-स. गुरदीप सिंघ*

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की महिमा अकथनीय है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महान त्यागी, धर्म-सुधारक, समाज-सुधारक, उच्च कोटि के बाणीकार, कुशल प्रशासक, दीन-दुखियों के हमदर्द, मार्गदर्शक, सच्चे बलिदानी, निष्काम देश-भक्त थे। उनके पास जो कुछ भी था, कौम के लिए अर्पित कर दिया। सरवंशदानी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी संत-सिपाही थे, इंकलाबी योद्धा थे। उन्होंने सच्चा-सुच्चा और उत्तम जीवन बिताने का संदेश दिया।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने ऊंच-नीच, कर्म-कांड, पाखंड आदि को समाप्त कर खंडे-बाटे की पाहुल छकाकर सबको समानता का अधिकार दिया। ऐसा धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक इंकलाब आज तक संसार में न कोई लाया है और न कोई ला सकेगा।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की निडरता, वीरता और दृढ़ इरादों ने संसार के इतिहास को बदल कर रख दिया। बुल्लेशाह कवि ने लिखा है :

न कहूं कब की, न कहूं तब की,
बात कहूं मैं अब की।
अगर न होते गुरु गोबिंद सिंघ,
तो सुन्नत होती सबकी।

जोति-बिगास में भाई नंद लाल जी लिखते हैं कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की प्रशंसा का वर्णन करना असंभव है। वह किताब के पर्दे में कैसे समा सकती है ?

यू तौसीफस आमद फज़ूं अज़ हिसाब।
कुजा गुंजद अंदर हजाबि किताब ॥१७४॥

संसार भर के इतिहासकारों और महान व्यक्तियों ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की महानता के बारे में अपने विचार व्यक्त किए हैं, जिनमें से कुछेक का उल्लेख निम्नानुसार है :-

बंगाल के इतिहासकार इंदू भूषण बैनर्जी के अनुसार : बैनर्जी ने अपनी पुस्तक 'एवोलेशन ऑफ दि खालसा' में लिखा है कि इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी हिंदोस्तान की उन महान हस्तिओं में से हैं जिनकी प्रतिभा अटल है। गुरु जी में पैगंबर, रक्षक, संत, भक्त, कलाकार, सुधारक, रूहानी अगुआ, बांटकर खाने वाले, विद्वान, विभिन्न भाषाओं के माहिर, नीतिवान, जरनैल, संत-सिपाही, परोपकारी, तीर-अंदाज़, उदारचित्त, तेग के धनी, सहनशील, घुड़सवार, निशानेबाज़, जगत-गुरु, निडर, निरवैर आदि गुण मिलते हैं।

गार्डन के अनुसार : जनता के मुर्दा ढांचे में जीवन की नई लहर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के उपदेशों ने डाली। गुरु जी में धार्मिक अगुआ, शहंशाह, बलवान योद्धा और ऊंचे नीतिवान के सारे गुण मौजूद थे। गुरु जी ने अपनी अगुआई में सिक्खों को शक्ति का धारक बनाया। यही कारण है कि कृपाण को सिक्खों की रहित का अंग बना दिया गया।

लाला दौलत राय के अनुसार : एक ही व्यक्ति में सभी प्रकार के गुण मिलना बहुत मुश्किल

*३०२, किदवाई नगर, लुधियाना-१४१००८; फोन : ९८८८१२६६९०

Final

बात है, परंतु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी बहुमुखी प्रतिभा वाली शख़्सियत थे। वे धार्मिक नेता, चोटी के सुधारक, महान विद्वान, बहुत बड़े बलवान, योद्धा और जरनैल थे। लोगों के सच्चे सहायक और अगुआ थे। लोगों का प्यार दिल में लेकर सच्चे जज़्बे से उन्होंने अपने उद्देश्य की ओर बढ़ना आरंभ किया तो अपने सरवंश को शहीद करवाने से भी संकोच नहीं किया। असफलता का शब्द गुरु जी के कोश में नहीं था। वे जो चाहते थे, करके गए।

सी. एच. पेन के अनुसार : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी पहले प्रमुख हुए हैं जिन्होंने लोक-राज को राजसी और धार्मिक क्षेत्र में व्यवहारिक रूप देकर अपनाया। इस प्रकार आप जी ने संगठित धर्म को पंचायती नियमों के अधीन करके प्रत्येक व्यक्ति को अपना स्वाभिमान पूरी तरह से मानने और प्रफुल्लित करने का अवसर दिया।

एलफिन्सटन के अनुसार : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जात-पांत के सभी भिन्न-भेद अपने सिक्खों में से दूर कर दिए। सभी इंसानों को समान समझा।

सर जॉन मैलकाम के अनुसार : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का उद्देश्य सभी सिक्खों को एक समान बनाना था और यह दर्शाना था कि उनकी उन्नति केवल उद्यम और परिश्रम पर निर्भर होगी। वे यह बात भली-भांति जानते थे कि तथाकथित निम्न जाति के लोगों को और मुर्दा-दिल इंसानों को उत्साह और सम्मान देकर उभारना कितना आवश्यक है। उन्होंने अपने सिक्खों के नाम तक बदल दिए और उन्हें 'सिंघ' (शेर) बना दिया।

गफ के अनुसार : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी संसार के अत्यधिक बुद्धिमान, सदैव चढ़दी कला में रहने वाले, आध्यात्मिक जज़्बे से ओत-प्रोत, आशावादी, धार्मिक रंग में रंगे हुए ऐसे महानायक थे, जिन्होंने अमृत की रस्म द्वारा कौम का नए सिरे से निर्माण किया।

कनिंघम के अनुसार : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की शख़्सियत और उपदेशों ने सिक्खों के मन का ही परिवर्तन नहीं किया, बल्कि उनका शारीरिक डील-डौल ही बदल दिया। आप जी ने सिक्खों में ऐसी रूह फूंकी कि सिक्ख हर प्रकार से बलवान और मज़बूत हो गए।

मैकालिफ के अनुसार : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी में जादू-सी शक्ति थी। उनके उपदेशों का साधारण लोगों पर जादू-सा प्रभाव पड़ा। उन्होंने दबे-कुचले लोगों को संसार के प्रसिद्ध योद्धा बना दिया। सिक्ख गुरु साहिबान से पहले किसी ने उन (दबे-कुचले) व्यक्तियों को संगठित करने का ख्याल तक नहीं किया था जिनको शासक दुत्कारते रहे थे।

मैकरेगर के अनुसार : यदि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के कार्यों को देखें; उनके धर्म-सुधार तथा कौम-निर्माण के कार्यों को देखें, साथ ही निजी बहादुरी और दुख-तकलीफों में दृढ़ता की गाथा पढ़ें और अंततः शत्रुओं तथा विपत्तियों के विरुद्ध मुकाबले में उनको विजय प्राप्त करते हुए देखें तो हमें श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को ऊंचा मानने में कोई संदेह नहीं होगा। हम समझ लेंगे कि सिक्ख क्यों आज तक श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की याद को सम्मान के रूप में मनाते हैं।

साधु टी. एल. वासवानी के अनुसार : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने जीवन-उद्देश्य द्वारा धर्म के साथ-साथ शक्ति और देश-भक्ति भी मिला दी। उन्होंने अपने आप को 'परम पुरख का दास' ही समझा। उन्होंने कहा कि जो केवल अपने ही जीवन और स्वार्थ को मुख्य रखेगा वह मेरा सिक्ख नहीं बन सकेगा। जो धर्म और

(शेष पृष्ठ १९ पर)

Final

हम इह काज जगत मो आए

*-स. हरचरन सिंघ**

दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का प्रकाश १६६६ ई में श्री गुरु तेग बहादर साहिब और माता गुजरी जी के गृह पटना साहिब (बिहार) में हुआ। आपके जन्म के समय पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब गुरमति प्रचार हेतु ढाका में थे। पिता-गुरु की आज्ञानुसार आपका नाम 'गोबिंद राय' रखा गया। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के प्रथम पांच वर्ष पटना साहिब में ही व्यतीत हुए। यहीं पर आपकी विद्या प्रारंभ हुई और बचपन की बाल-लीलाएं भी यहीं पर हुईं। कुशाग्र बुद्धि और निडरता आपको विरासत में ही प्राप्त हुई। बाल्य-काल से आपको शास्त्र एवं शस्त्र-विद्या में निपुणता हासिल थी।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने मात्र नौ वर्ष की अवस्था में ही पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब से कश्मीर से आए ब्राह्मणों की करुणामयी गुहार पर उनका धर्म बचाने के लिए विनती की, जिसकी मिसाल दुनिया के किसी भी इतिहास में मिलना असंभव है।

श्री गुरु तेग बहादर साहिब की शहादत के पश्चात श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने अनुयायिओं में नई चेतना पैदा कर उनमें सामाजिक स्वतंत्रता व राष्ट्रीय भावना स्थापित करने की इच्छा जागृत कर दी। आपने १६९९ ई में खालसा पंथ की स्थापना कर अपने से पहले गुरु साहिबान द्वारा आरंभ किए कार्य को सम्पूर्ण किया तथा सिक्ख धर्म को निश्चित और अंतिम स्वरूप दिया। डॉ हरीराम गुप्ता लिखते हैं-- "खालसा पंथ की स्थापना देश के धार्मिक व राजनीतिक इतिहास में एक युग के बदलने वाली घटना थी।"

इस संबंध में डॉ नारंग ने लिखा है-- "श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने ऐसा भाईचारा स्थापित किया जिसमें सब समान हैं। उन्होंने चारों (तथाकथित) जातियों को एक करने का प्रयत्न ही नहीं किया बल्कि धार्मिक असमानता को समाप्त कर लोकराज स्थापित किया।"

डॉ मैकल्ड के कथनानुसार-- "खालसा ऐसा संघ, भाईचारा, संगठन या समाज कहा जा सकता है, जिसकी नींव धार्मिक व सैनिक अनुशासन की थी।"

खालसा पंथ की सृजना कर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने सदियों से दबे-कुचले लोगों में ऐसा साहस भर दिया कि वे साहसिकता के प्रतीक बन गए। गुरु साहिब ने भिन्न-भिन्न प्रांतों एवं भिन्न-भिन्न वर्गों के पांच शूरवीरों को अमृत छकाकर उन्हें पांच प्यारों की उपाधि प्रदान की एवं पुरुषों को 'सिंघ' तथा स्त्रियों को 'कौर' का खिताब देकर विभूषित किया। स्वयं भी 'पांच प्यारों' से अमृत छक कर सिंघ सज गए। गुरु जी ने खालसा पंथ को अपना स्वरूप कहा तथा गुरु-शिष्य परंपरा को नया रूप दिया। उन्होंने खालसा पंथ को निर्धारित मर्यादाओं के अनुसार जीने का सहज मार्ग बताया, जिससे कि खालसा संत एवं सिपाही का जीवन चरितार्थ कर सके। खालसा एक का

**६९/११, निकट गुरुद्वारा साहिब, पुरानी रेलवे लाईन, आर एस पुरा, जम्मू-१८११०२, फ़ोन : ९४१९६२४२७८*

Final

उपासक हो, दीन-दुखियों की सेवा के लिए सदा तत्पर रहे, न किसी से डरे न डराए तथा न्याय एवं सद्भावना के पक्ष में रहे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का सम्पूर्ण जीवन अन्याय, अत्याचार, अनाचार, दमन, दुष्ट एवं आतंकवाद के खिलाफ संघर्षमयी रहा है। गुरु जी जीवन-पर्यन्त युद्धरत रहे। भारतवर्ष का प्राचीन इतिहास इस बात का साक्षी है कि युगांतर से अब तक धरती पर जितने भी युद्ध हुए उन सबका मुख्य कारण केवल और केवल जर, जोरू व जमीन ही रहा। इसके विपरीत श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने जीवन में जितने भी युद्ध किए उन सबका एकमात्र कारण जब्र एवं जुल्म से मानवता की रक्षा करना था। गुरु जी ने परधर्म की रक्षा हेतु समाज तथा देश के कल्याण के लिए जीवन भर संघर्ष किया। जब सत्तावानों ने सत्य को दबाया, शक्ति के बल पर भक्ति पर अकुंश लगाया, समय की मुगल सलतनत ने अत्याचार करना जारी रखा तो मानवता की रक्षा के लिए गुरु जी रणभूमि में कूद पड़े। गुरु जी का लक्ष्य किसी देश पर विजय प्राप्त कर राज्य स्थापित करना या शासक बनना नहीं था, बल्कि उनका उद्देश्य भारत की पवित्र भूमि को अत्याचारियों से मुक्त करवाना था। गुरु जी के युद्ध किसी धर्म, जाति, संप्रदाय या व्यक्ति विशेष के विरुद्ध नहीं थे, बल्कि ये युद्ध तो पाप, अत्याचार एवं समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार तथा कुरीतियों के विरुद्ध थे। गुरु जी ने अपने शिष्यों को भी संघर्ष करने और न्याय की रक्षा के लिए प्राण देने को प्रेरित किया।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने इस जगत में आने के अपने उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए अपनी पवित्र बाणी 'बचित्र नाटक' के छठे अध्याय में निम्न फरमान किया है :

हम इह काज जगत मो आए ॥
धरम हेत गुरदेव पठाए ॥
जहां तहां तुम धरम बिथारो ॥
दुसट दोखीअन पकरि पछारो ॥

आपके कथनानुसार अकाल पुरख परमात्मा ने आपको धर्म-प्रचार एवं दुष्टों का दमन कर दीन-दुखियों की रक्षा हेतु इस संसार में भेजा। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी जैसी बहुपक्षीय शख़्सियत का उदाहरण विश्व भर के इतिहास में मिलना नामुमकिन है। उनकी दृष्टि में न तो कोई दुश्मन है और न ही कोई बेगाना। वे दया के महासागर थे। समूची मानवता में ईश्वर का दीदार करने वाले गुरु साहिब मानव-प्यार को ही सच्ची उपासना मानते थे। इसी तथ्य को स्पष्ट करते उनके पावन शब्द उनके मानवतावादी दृष्टिकोण के परिचायक हैं :

हिंदू तुरक कोऊ राफजी इमाम सापी
मानस की जात सबै एकै पहिचानबो ॥

(अकाल उसतत)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के व्यक्तित्व पर उनके महान आचरण का ही प्रभाव था। लाखों की संख्या में जनसाधारण उनके अनुयायी बने। अत्याचार एवं दमन के विरुद्ध उनके द्वारा किए गए युद्धों का लंबा सिलसिला चला। जटिल से जटिल परिस्थितियों में भी उनका साहस और धैर्य सदैव कायम रहा। परम पूज्य पिता, माता, प्राणप्रिय चारों वीर सुपुत्रों एवं असंख्य साथियों के मार्मिक बलिदान के बावजूद उनका चढ़दी कला में रहना इस बात का प्रमाण है कि यदि गुरु जी का आगमन इस धरती पर न हुआ होता तो आज शायद भारतवर्ष का सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक

Final

नक्शा कुछ और ही होता। ये सारे तथ्य श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को संत-सिपाही का गौरव प्रदान करते हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी स्वयं को ईश्वर का सेवक मानते हैं। गुरु जी ने अनुभव किया कि प्रभावशाली धार्मिक नेता को कुछ समय बाद उसके अनुयायियों द्वारा भगवान का दर्जा दे दिया जाता है और वह इसे सहर्ष स्वीकार कर स्वयं की पूजा करवाना शुरू कर देता है, जैसा कि वर्तमान समय में भी हम देख सकते हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने कहा कि जो मुझे ईश्वर कहेगा वह नरक का भागीदार होगा, क्योंकि मैं परमेश्वर का सेवक हूं और उसी के निर्देशानुसार जगत में मानवता की सेवा के लिए शुभ कार्य करने आया हूं। आपके कथनानुसार :

जो हम को परमेसर उचरि हैं ॥
ते सभ नरकि कुंड महि परिहैं ॥
मो कौ दास तवन का जानो ॥
या मै भेद न रंच पछानी ॥
मै हो परम पुरख को दासा ॥
देखनि आयो जगत तमासा ॥ *(बचित्र नाटक)*

ईश्वर सबका पालनहार है एवं सभी मनुष्य समान हैं। गुरु जी ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति के अंदर एक ही ज्योति विद्यायान है। मैं भूलकर भी किसी अन्य भेद को स्वीकार नहीं करता :

एक ही की सेव सब ही को गुरदेव एक
एक ही सरूप सबै एकै जोत जानबो ॥
(अकाल उसतत)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी पंजाबी, हिंदी, बृज, संस्कृत, अरबी, फारसी और ऊर्दू के अच्छे ज्ञाता थे। आपने भक्ति रस एवं वीर रस में बाणी उच्चारण की। विषय निरूपण में आपको कमाल हासिल था। यदि अकाल की स्तुति करते हैं तो लगता है कि देश-काल की सीमा लांघ कर असीम में खो गए हों। उपमाओं और अलंकारों का प्रयोग देखते ही बनता है। उनकी बाणी पाठकों को आत्मविभोर कर देती है। आपने अपनी बाणी में वहमों, भ्रमों, पाखंडों एवं कर्मकांडों का ज़ोरदार एवं तर्कपूर्ण ढंग से खंडन करते हुए अकाल पुरख की उपासना का निरूपण किया है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने शिष्यों को प्रभु की भक्ति में लीन रहने का मार्ग प्रशस्त किया। आपने खालसा पंथ को श्री गुरु ग्रंथ साहिब के साथ जुड़ने का आदेश दिया। आपका स्पष्ट हुक्म है कि प्रत्येक सिक्ख श्री गुरु ग्रंथ साहिब को ही अपना इष्ट माने। ज्ञानी गिआन सिंघ के शब्दों में :

आगिआ भाई अकाल की, तबै चलायो पंथ।
सब सिक्खन को हुकम है गुरु मानिओ ग्रंथ।
गुरू ग्रंथ जी मानिओ प्रगट गरां की देह।
जो प्रभु को मिलबो चहै, खोज सबद मैं लेह।
(पंथ प्रकाश)

मुसलिम लेखक अल्ला यार खां योगी गुरु जी के आकर्षित व्यक्तित्व से प्रभावित होकर लिखते हैं :

अल्लाह की सौगंध है, नानक की कसम है।
जितनी भी तारीफ हो गोबिंद की कम है।

Final

मानव अधिकारों के प्रतीक श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी

*-डॉ. प्रदीप शर्मा 'स्नेही'**

भारत की पावन भूमि का कण-कण गुरु साहिबान की सुरभि से सुवासित है। इन महान विभूतियों व दिव्यात्माओं ने अपनी तेजस्विता से न केवल भारत वरन् सम्पूर्ण विश्व को आलोकित किया।

सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में भारतीय जनमानस औरंगज़ेब जैसे दुराचारी शासक के अत्याचारों से त्रस्त था। सिक्खों के नौवें गुरु श्री गुरु तेग बहादर साहिब लोगों को अत्याचारों से बचाने का भरसक प्रयास कर रहे थे। सन् १६६४ ई में वे बाबा बकाला साहिब छोड़कर कीरतपुर साहिब आ गए। उसके बाद उन्होंने श्री अनंदपुर साहिब बसाया। उन्होंने लोगों में उत्साह का संचरण करने व लोगों को अपने विचारों से अवगत कराने हेतु भारत-भ्रमण का निश्चय कर लिया। लोगों को गफलत की नींद से जगाते हुए वे पटना साहिब जा पहुंचे। वहां माता गुजरी जी को अन्य पारिवारिक सदस्यों के पास छोड़ कर वे आसाम व बंगाल की ओर प्रस्थान कर गए।

२३ पौष, संवत् १७२३ को माता गुजरी जी के यहां प्रभु-ज्योति-पुंज का जन्म (प्रकाश) हुआ। कालांतर में इसी ज्योति-पुंज ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी नाम से सम्पूर्ण भारत को आलोकित किया। श्री गुरु तेग बहादर साहिब को सुपुत्र के आगमन का शुभ समाचार प्रेषित किया गया।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जीवन के प्रथम छः वर्ष पटना साहिब में व्यतीत किए। वे बचपन से ही स्वाभिमानी थे। नेतृत्व के गुण उनमें दृष्टिगोचर होने लगे थे। चार वर्ष के पूर्वी राज्यों के प्रचार दौरे के पश्चात जब श्री गुरु तेग बहादर साहिब पटना साहिब लौटे तो सौम्य व तेजस्वी सुपुत्र को देखकर अति प्रसन्न हुए। कुछ समय वहां व्यतीत करने के पश्चात औरंगज़ेब की करतूतों से त्रस्त देश की जनता को हौसला देने पंजाब चले गए। पटना साहिब के राजा फतह चंद व उनकी रानी बाल-गुरु के सौंदर्य, निर्भयता व तेजस्विता देखकर मंत्रमुग्ध थे। वे उन्हें अंतर्रात्मा से प्यार करते थे। दो वर्ष बाद जब श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने समस्त परिवार को पटना साहिब से पंजाब बुलवा भेजा तो पटनावासियों, राजा व रानी के दुख की सीमा न रही। अश्रुपूरित नेत्रों से सबने बाल-गुरु जी को विदा किया। 'बचित्र नाटक' में गुरु जी ने इस घटना के विषय में फरमान किया है :

तही प्रकास हमारा भयो ॥
पटना सहिर बिखै भव लयो ॥
मद्र देस हम को ले आए ॥
भांत भांत के दईअन दुलराए ॥
कीनी अनिक भांत तन रच्छा ॥
दीनी भांत भांत की सिच्छा ॥
जब हम धरम करम मो आए ॥
देव लोक तब पिता सिधाए ॥

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी माता गुजरी, माता नानकी जी व अन्य के साथ अंबाला के निकट लखनौर आ गए। श्री गुरु तेग बहादर साहिब के आदेशानुसार छः माह यहीं प्रकृति की ममतामयी गोद में व्यतीत किए। लखनौर के बाद श्री अनंदपुर साहिब आ गए।

**प्राचार्य, जे. सी. डी. मेमोरियल पी. जी. कॉलेज, सिरसा, (हरियाणा)*

Final

श्री अनंदपुर साहिब व आसपास के गांवों से लोग श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दर्शनार्थ उमड़ पड़े। पिता-पुत्र का मिलन आलौकिक था।

श्री अनंदपुर साहिब में श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की शिक्षा का प्रबंध किया। मुंशी साहिब चंद ने हिंदी व संस्कृत तथा काजी पीर मुहम्मद ने उन्हें फारसी की शिक्षा दी। उन्हें सैन्य-संचालन की शिक्षा भी यहीं दी गई।

आततायी औरंगज़ेब का दमन-चक्र उन दिनों जोरों पर था। कश्मीरी हिंदुओं पर घोर अत्याचार हुए। उन्होंने श्री गुरु तेग बहादर साहिब से फरियाद की। वे विचारमग्न हो गए। तभी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी शस्त्रों से सुसज्जित अपने बाल सखाओं के साथ खेलते हुए आए और गुरु जी से लिपट गए। गुरु जी ने सुपुत्र के पूछने पर सारी स्थिति बताई। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने पिता जी से उनका निर्णय जानना चाहा। गुरु जी ने कहा, "एक बलिदानी की आवश्यकता है।" श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने कहा कि "आपके अतिरिक्त और कौन-सी महान आत्मा होगी?" यह सुनते ही श्री गुरु तेग बहादर साहिब मन ही मन खुश होकर अपने सुपुत्र की समझ पर फख्र महसूस करने लगे। भारत-भूमि के गौरवशाली इतिहास में ऐसे बहादुर पिता-पुत्र की मिसाल ढूंढे न मिलेगी।

लोगों को जागृत करते हुए, उन्हें जुल्म के विरुद्ध खड्गहस्त होने को ललकारते हुए श्री गुरु तेग बहादर साहिब धर्म-प्रचार दौरे पर चल दिए। मार्ग में ही गिरफ्तार कर उन्हें दिल्ली ले जाया गया। इसलाम धर्म ग्रहण करने की बजाय उन्होंने मृत्यु का आलिंगन करने को अधिमान दिया। सन् १६७५ ई में वे दिल्ली के चांदनी चौंक, जहां आजकल गुरुद्वारा सीसगंज साहिब है, में शहीद कर दिए गए। उनके इस महान व अविस्मरणीय बलिदान से देशवासी और भी जागृत हो हठे।

गुरु-पिता की शहादत के पश्चात कई दिनों तक दसवें गुरु भावी व्यूह-रचना करने में व्यस्त रहे। उन्होंने अत्याचारों व कुरीतियों के विरुद्ध लड़ने का दृढ़ निश्चय कर लिया था।

गुरु जी ने नवयुवकों को एकत्र कर, उन्हें देश-प्रेम की सीख देकर सैन्य-संचालन में प्रवीण करना आरंभ कर दिया। दूर-दूर से श्रद्धालु दर्शानार्थ आते व भेंटें लाते। पहाड़ी राजाओं से गुरु जी की यशो-कीर्ति सहन नहीं हुई। कटोच राजा कृपाल चंद को औरंगज़ेब ने अपनी ओर गांठ लिया था। श्री अनंदपुर साहिब के चारों ओर फैली रियासत का राजा भीमचंद भी गुरु जी को मिली बेशकीमती भेंटों (सुंदर रेशमी तंबू, हाथी व अन्य वस्तुएं) को प्राप्त करने में असफल रहने के कारण उनका दुश्मन हो गया।

माता गुजरी जी की आज्ञा से संवत् १७४१ की वैसाखी को गुरु जी कुछ सैनिकों को श्री अनंदपुर साहिब की रक्षार्थ छोड़ नाहन की ओर चल पड़े। नाहन के तत्कालीन राजा मेदनी प्रकाश की विनती स्वीकार कर गुरु जी ने नाहन के निकट यमुना के किनारे डेरा डाल दिया। कुछ ही दिनों में यहां एक किला बन गया। इसका नाम 'पाउंटा' (पांवटा) रखा गया। यहां श्री अनंदपुर साहिब की तरह चहल-पहल हो गई।

संवत् १७४४ में पहाड़ी राजाओं की सेना ने पाउंटा साहिब के निकट भंगाणी के मैदान में डेरा डाल लिया और आक्रमण कर दिया। गुरु जी के नेतृत्व में सिक्खों ने भीषण युद्ध किया। गुरु जी ने पहाड़ी राजाओं को बुरी तरह पराजित किया। गुरु जी फिर श्री अनंदपुर साहिब लौट आए और उन्होंने अपनी सैन्य-शक्ति बढ़ानी आरंभ कर दी।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के घर चार साहिबज़ादों का जन्म हुआ। इनके नाम थे-- बाबा अजीत सिंघ जी, बाबा जुझार सिंघ जी, बाबा ज़ोरावर सिंघ जी और बाबा फतिह सिंघ

Final

जी। चारों साहिबज़ादों के बलिदान की अमर गाथा से सम्पूर्ण विश्व परिचित है।

संवत् १७५६ (१६९९ ई) की वैसाखी का दिन भारत के इतिहास का सुनहरा दिन था। इसी दिन श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा पंथ की स्थापना की। उनके आह्वान पर विभिन्न तथाकथित जातियों के पांच सिक्ख अपना शीश अर्पित करने सामने आए। भाई दया राम, भाई धरम दास, भाई हिंमत राय, भाई मोहकम चंद व भाई साहिब चंद को उनके साहस व समर्पण के फलस्वरूप गुरु जी ने विधिपूर्वक अमृत-पान कराकर 'सिंघ' बना दिया और 'पांच प्यारे' नाम दिया। उसी दिन से वे भाई दया सिंघ, भाई धरम सिंघ, भाई हिंमत सिंघ, भाई मोहकम सिंघ तथा भाई साहिब सिंघ कहलाए। गुरु जी ने पांच ककारों-- केश, कंघा, कड़ा, कृपाण तथा कछहिरा को धारण करने की प्रेरणा दी। उनका समाजवाद अनूठा था। सभी जातियों के लोग एक साथ बैठकर लंगर छकने लगे, जिससे नए युग का आरंभ हुआ।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने पहाड़ी राजाओं का आह्वान किया कि मिल-जुलकर मुगल अत्याचारों का मुकाबला करें, सभी लोगों को गले लगाएं, लेकिन गुरु जी के सद्विचार उनके गले नहीं उतरे। उन्होंने एकत्रित होकर संवत् १७५८ में श्री अनंदपुर साहिब पर आक्रमण कर दिया। जब वे गुरु जी की सेना के समक्ष कुछ न कर सके और पराजित हुए तो उन्होंने औरंगज़ेब से सहायता की गुहार लगाई।

औरंगज़ेब ने तत्काल अपनी सेना गुरु जी को परास्त कर गिरफ्तार कर लाने हेतु भेजी। श्री अनंदपुर साहिब में भीषण युद्ध हुआ और कई दिनों तक चलता रहा। लंबे समय तक किले की घेराबंदी के बाद गुरु जी को श्री अनंदपुर साहिब छोड़ना पड़ा। चमकौर साहिब में स्थित मज़बूत हवेली को किले की तरह प्रयोग कर मोर्चा जमा लिया गया। शाही सेना वहां भी पहुंच गई। भीषण युद्ध हुआ। गुरु जी के दो सुपुत्र साहिबज़ादा अजीत सिंघ जी तथा साहिबज़ादा जुझार सिंघ जी बहादुरी से घनघोर युद्ध करते हुए शहीद हो गए। अपने प्रिय वीरों की सलाह मानते हुए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी भारी मन से चमकौर साहिब से रवाना हो गए। एक सिक्ख भाई संगत सिंघ ने गुरु जी की कलगी व पोशाक पहन कर शाही सेना को भ्रम में डाल अपनी शहादत दे दी। उनका शीश श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के शीश के रूप में औरंगज़ेब को पेश किया गया। बाद में जब वस्तुस्थिति का पता चला तो वह बहुत लज्जित हुआ। गुरु जी फिर सिक्खों के सैन्य बल को संगठित करने में लग गए।

उधर गुरु-घर के एक भूतपूर्व सेवक गंगू ने धोखे से माता गुजरी जी व दोनों छोटे साहिबज़ादों-- बाबा जोरावर सिंघ जी तथा बाबा फतिह सिंघ जी को सरहिंद के जालिम सूबेदार के पास गिरफ्तार करा दिया। उसने तरह-तरह के अत्याचार कर उन तीनों पर इसलाम धर्म धारण करने के लिए जोर डाला, लेकिन सफल न हुआ। अपनी चाल में विफल रहने के पश्चात क्रोधित होकर उसने छोटी आयु के दोनों साहिबज़ादों को दीवार में ज़िंदा चिनवा दिया। छोटे साहिबज़ादों के बलिदान को देखकर मानो दीवारें भी कराह उठीं; पशु-पक्षी क्रंदन कर उठे। साहिबज़ादों ने अपने रक्त से खालसा पंथ की नींव को सिंचित किया। माता गुजरी जी को जब साहिबज़ादों की शहादत का समाचार मिला तो वे भी भगवान को धन्यवाद दे इस लोक से महाप्रयाण कर गईं।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का व्यक्तित्व महान था। वे दिव्य दृष्टा, महान क्रांतिकार, जननायक थे। धर्म-रक्षा व मानव आज़ादी के लिए पिता एवं सुपुत्रों का बलिदान देने वाले इस विराट व्यक्तित्व की मिसाल विश्व इतिहास में शायद ही मिले!

Final

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी

–स. रविंदर सिंघ*

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी, इस नामे उच्चारण मात्र से ही मानव शरीर में एक ऊर्जा प्रवाहित होने लगती है। कलियुग के प्रथम धर्म क्रांतिकारक श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा मानवता के पक्ष में किए गए कार्य, उनके बलिदान इस युग के लिए और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणादायी रहेंगे। उन्होंने अपने अनुयाईयों को शास्त्रों के साथ-साथ शस्त्रों की भी दीक्षा प्रदान की कि वे जहां कहां अधर्म, अन्याय, अनीति देखें, वहां प्रतिकार कर अपनी अस्मिता और अधिकारों के की रक्षा करें। गुरु जी के इस तर्क सिद्धांत से भारत वर्ष में पहली बार धार्मिक क्रांति उद्घटित हुई, जिसने निर्बल, थके-हारे, भयभीत मानव समूह में स्वाभिमान जागृत किया। इतिहास साक्षी है कि किस तरह एक योद्धा ने धर्म-युद्ध में सवा लाख सेना का सामना किया।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का जन्म श्री गुरु तेग बहादर साहिब (नौंवें गुरु) के घर और माता गुजरी जी की कोख से पटना साहिब (बिहार) में हुआ था। गुरु जी की आयु जब मात्र पांच वर्ष रही होगी तब उनके पिता श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने कश्मीरी पंडितों की धर्म-रक्षा हेतु अपना बलिदान दे दिया। गुरु जी ने धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ विद्या भी हासिल की। जहां एक ओर उन्होंने सत परंपरा का वहन कर बाणी-रचना की वहीं, जुल्म एवं अत्याचार के विरुद्ध युद्ध करके धर्म-कर्त्तव्य का पालन भी किया।

गुरु जी ने अपने जीवन में कभी अहं और जातीयवाद को घर नहीं करने दिया। गुरु जी ने सदा एक परमेश्वर की संकल्पना को स्वीकार किया। अपने कृत्यों की अनुपालना के जरिए उन्होंने जातीयवाद और आडंबरों को करारा जवाब दिया। अपनी बाणी में गुरु जी ने मानवता की व्याख्या कर एकता और भाईचारे का संदेश दिया। गुरु जी के मानवता के संदर्भ में विचार काव्य रूप में यूं अभिव्यक्त हुए हैं :

कोऊ भइयो मुंडीआ संनिआसी कोऊ जोगी भइओ,
कोऊ ब्रह्माचारी कोऊ जती अनुमानबो ॥
हिंदू तुरक कोऊ राफजी इमाम साफी,
मानस की जात सबै ऐके पचिचानबो ॥

(अकाल उसतत)

जिस दौर में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी अवतरित हुए थे, उस दौर के शासकों ने देश की प्रजा पर कई तरह के अंकुश लाद रखे थे। उर्दू और फारसी के अलावा अन्य भाषाओं में शिक्षा पाना अनुबंधित सा था।

काशी और कुछ धार्मिक स्थलों पर संस्कृत विद्यालय चोरी-छूपे तौर पर संचालित होते थे। ऐसे विषय परिस्थितियों में गुरु जी ने अपने शिष्यों को संस्कृत भाषा आत्मसात करने हेतु काशी भेजा था। उन्होंने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की पुनसंपादना का कार्य करवाकर उसमें नवम् पातशाह की बाणी शामिल कर गई। वे एक कुशल धर्म नेता थे। स्वयं की नेतृत्व क्षमता के जरिए उन्होंने समाज को एक सूत्र में पिरोने का

*सेक्टर-२, अबिचल नगर कालोनी, भगत सिंघ रोड, नांदेड़ (महाराष्ट्र)-४३१६०१, फोन : ९४२२८७४३००

Final

अद्वितिय कार्य किया।

समाज प्रबोधन, बाणी-रचना और धर्म-रक्षा करते हुए सन् १६९९ में गुरु जी ने सिक्ख पंथ को खालसा पंथ के सिद्धांतों में बांध दिया। वैसाख के पहले दिन एक भव्य जनसमुदाय के समक्ष उन्होंने विविध जाति-धर्मों के लोगों को अमृत-पान की दीक्षा प्रदान कर खालसा पंथ की स्थापना की गुरु जी द्वारा तय किया गया खालसा का प्रारूप आज भी उन्हीं सिद्धांतों पर अटल हैं। गुरु जी ने विभिन्न जाति-धर्मों का कुशल संगठन कर उसे वीर रस से ओत-प्रोत कर दिया। गुरु जी ने यह करिश्मा अपने उन्हीं अनुयाइयों से करवाया था, जो अधर्म, अन्याय, अत्याचार और सत्ता की बेधुंदी से कभी त्रस्त थे। निर्बलों में प्रतिकार की ऊर्जा पैदा कर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने यह दर्शा दिया कि सत्य और साहस के बल पर समाज का चित्र ही नहीं संवारा जा सकता, बल्कि एक क्रांतिकारी भयमुक्त समाज भी खड़ा किया जा सकता है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की महिमा

(पृष्ठ ११ का शेष)

लोक-सेवा के लिए अपने प्राण देगा, वही मेरी निकटता प्राप्त कर सकेगा।

मुहम्मद लतीफ के अनुसार : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी का उद्देश्य ऊंचा था और जिस कार्य को उन्होंने आरंभ किया था वह महान था। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की बरकत और महानता है कि निर्जीव एवं पिछड़े हुए लोग भी जत्थेबंद हो गए और उन्होंने राजनीतिक प्रभुता एवं आज़ादी प्राप्त की।

कवि अमृत राय के अनुसार : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के समकालीन कवि अमृत राय ने लिखा है कि कायरों (गीदड़) को शेर बनाकर युद्ध में भिड़ा देना, ऐसा कार्य गुरु जी द्वारा ही संभव है। जब रणजीत नगाड़ा बजाया जाता तो ऐसी जोशीली आवाज़ पैदा होती कि पहाड़ी राजा अंदर ही दुबक जाते।

ये हैं अलग-अलग धर्मों से संबंधित बुद्धिजीवियों और इतिहासकारों के श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की महिमा के प्रति विचार। ऐसे महान गुरु जी के लिए जितनी भी उपमाएं दें, कम पड़ जाती हैं। लाला दौलत राय ने सारी उपमाओं को एक ही शब्द में समेट दिया-- 'साहिब-ए-कमाल'।

ऐसी बेमिसाल प्रतिभा वाले पैगंबर की महिमा शब्दों के कोश में नहीं समा सकती। अपनी बात को अल्ला यार खां योगी (शहीदानि-वफा) के इन शब्दों में समाप्त करनी चाहता हूं :

इंसाफ करे जी में जमाना तो यकीं है।
कहिदे गुरु गोबिंद सिंघ का सानी ही नहीं है।
हरचंद मेरे हाथ में पुर जोर कलम है।
सतिगुर के लिखूं वसफ कहां ताबि रकम है।
करतार की सौगंध है नानक की कसम है।
जितनी भी हो गोबिंद की तारीफ वो कम है।

Final

श्री गुरु नानक देव जी की बाणी जपु जी साहिब

-डॉ. जगजीत कौर*

जपु जी साहिब श्री गुरु नानक देव जी द्वारा उच्चरित आध्यात्मिक साहित्य की ऐसी अनूठी, अनुपम बाणी है जो मानव को अध्यात्म जगत के उस अनूठे लोक में पहुंचा देती है जहां निरोल आत्म सुख की अनुभूतियां उसे परम सत्य की तादात्मयता से प्राप्त होती हैं। चूंकि जपु जी साहिब का मूल विषय परम सत्य, परम ब्रह्म, अकाल पुरख अनंत प्रभु के चरणों के साथ जिज्ञासु को जोड़ना है और यदि जिज्ञासु सही अर्थों में अंतर्मन की चित्त-वृत्तियों को एकाग्र कर गहन अवचेतना के लोक से जुड़ उस अनंत का गहन चिंतन-मनन करे तो उस आत्म सुख की तुलना अन्य किसी सुख से नहीं की जा सकती। स्पष्ट है कि जपु जी साहिब गहन परमार्थ, सुख अनुभूतियों से जुड़ी विश्व धर्म साहित्य की अनुपम बाणी है।

यद्यपि आकार में यह केवल ३८ पउड़ी (पद) और दो सलोक उच्चरित पावन बाणी है, किंतु जिस प्रकार सूत्रात्मक शैली में गुरु साहिब ने विशद गूढ़ दार्शनिक विचारों को प्रकट किया है, उसमें गुरमति के लगभग सभी मौलिक सिद्धांतों का विवेचन इसमें समाहित है और यह अपने आप में प्रबंध काव्य की गरिमा को धारण किए हुए है। जपु जी साहिब रहस्यवादी बाणी है। इसमें अनंत, अगम्य, अगोचर, परम सत्य को मानव से जोड़ कर उसके लिए नैतिक, सामाजिक और सामूहिक जीवन का दिशा-निर्देश किया गया है।

सृष्टि के प्रारंभ से ही मानव की जिज्ञासा यह जानने की रही है कि उसका अस्तित्व क्या है। इस विशाल सृष्टि का रचयिता कौन है? उस अनंत शक्ति का रूप-स्वरूप जानने की सहज जिज्ञासा उसमें रही है। किस जीवन-विधि को अपना कर वह सत्य को जान सकता है? इस समस्या का समाधान प्रारंभ में ही दे दिया गया है कि मानव जीवन का लक्ष्य-उद्देश्य सत्य की खोज कर तल्लीनता प्राप्त करना है और 'सचिआरा' बनना है— *"किव सचिआरा होईऐ किव कूड़ै तुटै पालि ॥"* मूल रूप में जीव उस अनंत ज्योति का ही अंश है, किंतु अपने कुकुर्मों के कारण परम ज्योति से वह विछिन्न होकर योनियों में भटक रहा है, मिथ्या अज्ञान में भटक रहा है, अहं की दीवारों में सिमटा पड़ा है। गुरु साहिब उसे सचेत कर रहे हैं कि इन मिथ्या अहंकार-हउमै की दीवारों को तोड़ो, सचिआर बनो, सत्य से जुड़ो। अब प्रश्न है कि सत्य के साथ जुड़ें कैसे और मिथ्या अहंकार की दीवारों से मुक्त कैसे हों? इसके लिए गुरुदेव जी समस्या के साथ समाधान भी पहली पउड़ी में ही उपदेश कर रहे हैं— *"हुकमि रजाई चलणा नानक लिखिआ नालि ॥"* उस परम सत्य द्वारा स्थापित हुक्म, विधि-विधान, अनुशासन, नियम के अनुसार चल कर ही सत्य में लीन हो सकते हैं। परम सत्य का स्वरूप, उसका अस्तित्व क्या है, इसे जपु जी साहिब के प्रारंभ में स्पष्ट किया गया है, जिसे श्री गुरु ग्रंथ साहिब के संकलन-कर्त्ता साहिब श्री गुरु अरजन देव जी ने समूची बाणी के विशाल बोहिथ के आरंभ में संकलित किया है और जो गुरमति का मूल-मंत्र है, मौलिक सिद्धांत है— *"ੴ सतिनामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥"* परम सत्य

*१८०१-सी, मिशन कम्पाउंड, निकट सेंट मेरीज़ अकादमी, सहारनपुर (उ प्र)-२४७००१, फ़ोन : ९४१२४-८०२६६

Final

परमात्मा एक ही है, जो सार्वभौम, सर्वकालिक, सदीवी सत्य है। सत्य ही उसका नाम रूप है। अखिल सृष्टि का रचयिता कर्त्ता वही है, अन्य कोई दूसरा नहीं है। वह निर्भय है, शत्रु-भाव से हीन निरवैर है, देश-काल की सीमा से मुक्त कालातीत स्वरूप है। वह स्वयंभू है। उसे जन्म देने वाला, बनाने वाला कोई नहीं है। योनियों की सीमा से परे है। ऐसी परम सत्य विशेषताओं से पूर्ण परमात्मा को प्राप्त करने का एकमात्र साधन सतिगुरु द्वारा प्रदत्त कृपा-दृष्टि 'प्रसाद' है। इसके आगे 'जपु' शब्द इस तथ्य का द्योतक है कि यहां से जपु जी साहिब बाणी का प्रारंभ है। पहले सलोक दिया गया, जो स्पष्ट संकेत है कि परम सत्य युगों-युगों से अस्तित्व में था। युगों के अंत तक उसका अस्तित्व स्थिर रहेगा और वर्तमान में भी वही असीम परम सत्य अस्तित्ववान है। उसका अस्तित्व सर्वकालीन है। वह सर्वकालिक सत्य है। इससे आगे की ३८ पउड़ियों में उस असीम सत्य की निकटता प्राप्त करने का साधना-पथ दर्शाया गया है। सर्वप्रथम तो यह जान लेना जरूरी है कि सारी सृष्टि, सृष्टि की गतिविधि, संचालन, उसी परम सत्य के हुक्म से ही हो रहा है :

हुकमी होवनि आकार हुकमु न कहिआ जाई ॥
हुकमी होवनि जीअ हुकमि मिलै वडिआई ॥
हुकमी उतमु नीचु हुकमि लिखि दुख सुख पाईअहि ॥
इकना हुकमी बखसीसु इकि हुकमी सदा भवाईअहि ॥
हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकमु न कोइ ॥
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥
(पन्ना १)

जब मनुष्य हुक्म को पहचान लेता है कि तमाम ब्रह्मांड की गतिविधियां उसी परम सत्य के हुक्म से ही परिचालित हैं, तो उसके अंतर की अहंता गलने लगती है। तब वह देख पाता है कि सारी सृष्टि का कण-कण उस परम सत्य के प्रशस्ति-गायन में व्यस्त है और उसे भी उसी गायन द्वारा ही बल, सम्मान, प्रतिष्ठा, सदैव सुख, परम संतोष की प्राप्ति हो सकती है :

गावै को ताणु होवै किसै ताणु ॥ (पन्ना १)

वह परम शक्ति, जिसका गायन हो रहा है, सृष्टि को युगों-युगों से नियामतें प्रदान कर रही है और तमाम कायनात को खिलता, हंसता, उन्नत होता देख अतीव आनंद रूप प्रभु स्वयं आनंदित होता है— *"हकमी हुकमु चलाए राहु ॥ नानक विगसै वेपरवाहु ॥"*

तीसरी से सातवीं पउड़ी तक के माध्यम से बताया गया है कि अनेकानेक जिसकी गणना नहीं हो सकती, उसी परम ब्रह्म की कीर्ति, यश गायन करने में लगे हुए हैं। यद्यपि उस सर्वशक्तिमान के अनंत गुणों का गुणानुवाद, कथन-गायन असंभव है फिर भी प्रभु का ज्ञान-बोध गुरमुखों द्वारा हो सकता है, क्योंकि गुरमुख के वचन नाद-वेद तुल्य हैं। गुरु की शरण में आकर केवल विनम्र प्रार्थना की जा सकती है— *"हे सर्व जीव-मात्र के दाता प्रभु! मुझे बुद्धि-बल प्रदान करो। मैं एक पल-मात्र के लिए भी तुम्हें विस्मृत न करूं।"*

गुरा इक देहि बुझाई ॥
सभना जीआ का इकु दाता
सो मै विसरि न जाई ॥ (पन्ना २)

आठ से ग्यारह और बारह से पंद्रह तक की पउड़ियों में साधना पक्ष को दर्शाया है। यश-कीर्ति सुनने और मनन करने से किन सिद्धियों की प्राप्ति होती है; जिज्ञासु की आत्म-अवस्था किस विस्माद अवस्था को पहुंचती है, निर्देश दिया गया है। सोलह से उन्नीस तक पउड़ियों में *"कुदरति कवण कहा वीचारु ॥ वारिआ न जावा एक वार ॥ जो तुधु भावै साई भली कार ॥ तू सदा सलामति निरंकार ॥"* द्वारा सृष्टि की अनंतता बताकर सृजनकर्त्ता की सृजन शक्ति को नमन किया गया है; बलिहार, कुर्बान जाने की प्रेरणा दी गई है। २१वीं पउड़ी में सृजनकर्त्ता को

Final

अनंत गुणों का भंडार बताकर २२वीं पउड़ी में स्पष्ट किया है कि यद्यपि अनेक धर्म-मतों ने सृष्टि-सृजना के प्रति अपने मत पेश किए हैं किंतु ब्रह्म असीम है, उसकी रची सृष्टि भी असीम है। वह अनंत, असीम स्वयं ही इस रहस्य को जानता है। अन्य कोई उसके तुल्य नहीं हो सकता :

लेखा होइ त लिखीऐ लेखै होइ विणासु ॥
नानक वडा आखीऐ आपे जाणै आपु ॥ (पन्ना ५)

परमात्मा की महानता, महिमा का वर्णन करते हुए २३-२५ तक की पउड़ियों में भी यही बताया गया है कि जैसे अनेक छोटे नदी-नाले समुद्र में समाहित हो जाते हैं, किंतु समुद्र की विशालता, गहनता का वर्णन नहीं हो सकता, उसी तरह परम सत्य की महिमा भी कथन से बाहर है। उसका अंत नहीं पाया जा सकता।

२६वीं और २७वीं पउड़ी अत्यंत विस्मादमय, रहस्य-परिपूरित है। प्रभु के 'अमुल गुण', 'अमुल वपार' उसके कर्म-व्यवहार हैं। उसके अनंत ठिकानों का वर्णन 'सोदरु' की पउड़ी में है कि उस रूहानी, अद्भुत, विस्मादमय ठिकाने पर पहुंच कर नानाविध प्रकृति, प्रकृति के तत्व, प्रभु द्वारा सृजित देवी-देवता, ऋषि-मुनि, धर्मराज, साधक सभी उसी के हुक्मानुसार चलते हैं; उसका यश-कीर्ति गायन करने में लगे हैं। वह पातशाहों का पातशाह है :

--सो पातिसाहु साहा पातिसाहिबु नानक रहणु रजाई ॥ (पन्ना ६)
--मुंदा संतोखु सरमु पतु झोली
धिआन की करहि विभूति ॥
खिंथा कालु कुआरी काइआ जुगति डंडा परतीति ॥
(पन्ना ६)

२८ से ३१ तक की पउड़ियों में योगी-समाज द्वारा अपनाई गई साधना-विधि की निरर्थकता दर्शायी गई है। ३२वीं-३३वीं पउड़ी में स्पष्ट किया गया है कि केवल निर्मल हृदय से प्रभु-नाम-सिमरन से ही प्रभु की निकटता प्राप्त हो सकती है। प्रभु की कृपा-दृष्टि जिस पर हो जाती है वह उसकी रजा के अनुसार चलकर बख़्शिश का पात्र बनता है।

जपु जी साहिब की ३५-३७ तक की तीन पउड़ियां इस दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं कि इनमें उन पांच अध्यात्म मंडलों का दर्शन प्रस्तुत किया गया है, जो जिज्ञासु के अध्यात्म मार्ग के अनुसंधाता के साधना सोपान को स्पष्ट करते हैं। साथ ही साथ दिशा-निर्देश भी करते हैं। कैसे अध्यात्म पथ साधक, राही प्रथम स्थूल जगत धर्म खंड में प्रवेश करता है, जहां उसे अनुभव होता है कि यह धरती धर्मशाल है, जहां जिज्ञासु धर्म अथवा अपने फर्ज को समझता है, तद्नुसार कर्म करता है और उन्हीं कर्मों के अनुसार उसे फल भी प्राप्त होता है। यहां कर्म और उसके अनुसार फल-प्राप्ति का नियम प्रमुख है। कर्मों के द्वारा यदि ये कर्म उत्तम कोटि के हों, तो उसका प्रवेश ज्ञान खंड में होता है, जहां उसे नानारूपात्मक ब्रह्मांड का ज्ञान होता है :

केते पवण पाणी वैसंतर केते कान महेस ॥
केते बरमे घाड़ति घड़ीअहि रूप रंग के वेस ॥
केतीआ करम भूमी मेर केते केते धू उपदेस ॥
केते इंद चंद सूर केते केते मंडल देस ॥
(पन्ना ७)

इसी रूहानी खंड में पहुंच कर उसे ज्ञान होता है कि सृजनहार कर्त्ता प्रभु द्वारा निर्मित अनेक पर्वत, सूर्य, समुद्र लोक, समुद्र में समाहित रत्न, मणियां, अनंत वाणी बोलने वाली निर्मल वृत्ति की आत्माएं, प्रभु-सेवक, अनंत देवी-देवता, जिनका *"नानक अंतु न अंत"* कोई अंत नहीं। इस अवस्था में पहुंच कर कुदरत की असीमता का आभास होता है। यहां ज्ञान की प्रचंडता है।

गिआन खंड महि गिआनु परचंड ॥
तिथै नाद बिनोद कोड आनंद ॥ (पन्ना ७)

ज्ञान-प्राप्त जिज्ञासु परम आनंद, खेड़े-खुशियों

Final

की अवस्था को प्राप्त होता है। तब उसका उपक्रम रहता है कि वह भी श्रम करे। उसकी बुद्धि, मन, मनसा, वाचा, कर्मणा, में जो कुरूपता है, उसे दूर करे। उसे शुद्ध ब्रह्ममय रूपवान बना दे। सौंदर्यानुभूति जागृत होती है। वह श्रम करता है, संघर्ष करता है। हे प्रभु! कृपा करो। मुझमें *"सुरा सिधा की सुधि"* दिव्य देव तुल्य सद्बुद्धि की प्राप्ति हो और तब श्रम (सरम) खंड में परिश्रम करते हुए अपनी मन-वृत्ति को काबू कर संवारता, कूरूपता को दूर करता, दिव्य रूप-प्राप्ति की दिशा में चलता प्रभु-कृपा 'करम खंड' में प्रवेश करता है, जहां परमात्मा की कृपा से कर्म-मुक्त हो जाता है, निस्पृह हो जाता है। आसा-मनसा, कामना-वासना, स्फुरण (विचार), अच्छे-बुरे विचारों से मुक्त, अच्छे-बुरे संस्कारों से मुक्त, निष्काम, जन्म-मरण की वासना से मुक्त, उन्मुक्त, स्वतंत्र, स्वच्छंद आत्मा हो जाती है और तब वह प्रभु-चरणों से ऐसे जुड़ जाती है कि कोई मायावी शक्ति उसे अलग नहीं कर सकती :

करम खंड की बाणी जोरु ॥
तिथै होरु न कोई होरु ॥
तिथै जोध महाबल सूर ॥
तिन महि रामु रहिआ भरपूर ॥
तिथै सीतो सीता महिमा माहि ॥
ता के रूप न कथने जाहि ॥
न ओहि मरहि न ठागे जाहि ॥
जिन कै रामु वसै मन माहि ॥ (पन्ना ७)

अब जिज्ञासु माया के बंधनों से मुक्त निस्पृह आत्मा-भक्त बन जाता है, जहां सचखंड में प्रवेश पा जाने योग्य हो जाता है। सचखंड, जो असीम शक्ति-पुंज परमात्मा का निवास-स्थल है-- 'सचखंड'।

सच खंडि वसै निरंकारु ॥
करि करि वेखै नदरि निहाल ॥
तिथै खंड मंडल वरभंड ॥
जे को कथै त अंत न अंत ॥ (पन्ना ८)

यहां पहुंचा अध्यात्म पथ का राही प्रभु द्वारा अनेकानेक आनंद-स्रोत बख़्शिशों का पात्र बन जाता है। परमात्मा मौज में आकर *"वेखै विगसै करि वीचारु ॥ नानक कथना करड़ा सारु ॥"* जिनका कथन बाणी द्वारा असंभव है, ऐसे बख़्शिशों के खज़ाने लुटा देता है। यह सचिआरे की अंतिम मंज़िल है।

जिस जीव को जपु जी साहिब के आरंभ में 'सचिआरा' बनने का जीवन-मनोरथ बताया गया था, सचखंड में वह सचिआरा बनकर पहुंच जाता है। अंतिम ३८वीं पउड़ी में साधना मार्ग बताया है-- *"जतु पाहारा धीरजु सुनिआरु ॥ अहरणि मति वेदु हथीआरु ॥ भउ खला अगनि तप ताउ ॥ भांडा भाउ अंम्रितु तितु ढालि ॥ घड़ीऐ सबदु सची टकसाल ॥"* यह भी स्पष्ट किया गया है कि साधना भी उनकी सफल होती है जिन पर प्रभु की नदरे-इनायत हो :

जिन कउ नदरि करमु तिन कार ॥
नानक नदरी नदरि निहाल ॥ (पन्ना ८)

अंतिम सलोक *"पवणु गुरू पाणी पिता माता धरति महतु"* में जीवों को उपदेश दिया गया है कि यह समग्र सृष्टि, इसके तत्व-- धरती, जल, वायु परमात्मा द्वारा निर्मित हैं, जो नियमानुसार चलते हैं। जीव को नियमबद्ध होकर ही 'धरती धरमसाल' में रहना है; परमात्मा का नाम-सिमरन करना है; कर्मानुसार फल भोगना है। जो नाम-सिमरन-श्रम द्वारा जीवन चलाते हैं उनका सचखंड में उज्जवल मुख लेकर प्रवेश होता है। वे न केवल अपना बल्कि अपनी उत्तम संगत से अनेक प्राणियों का भी जीवन सफल, सार्थक बना जाते हैं; उन्हें भी मुक्त आत्मा कर देते हैं :

जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि ॥
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि ॥
(पन्ना ८)

Final

गुरु साहिबान की बाणी में विदित और उपदेशित संस्कृति

*-डॉ हरनाम सिंघ शान**

श्री गुरु ग्रंथ साहिब सिक्ख संस्कृति का मुख्य स्रोत और मूल आधार है। इसमें विदित और उपदेशित संस्कृति कई अन्य पक्ष से भी बहुत विशेष और विलक्षण है। इसके तत्व, अंश, नाम और लक्षण आदि के बारे में इसमें ही जो शुभ संकेत इस्तेमाल किया हुआ लगता है, वह मेरी समझ के अनुसार इसके पवित्र और महान संपादक श्री गुरु अरजन देव जी के नीचे लिखे वचनों के अनुसार नाम-आचार है :

--करम धरम अनेक किरिआ
सभ ऊपरि नामु अचारु ॥ (पन्ना ४०५)
--नामु हमारै सगल आचार ॥
नामु हमारे निरमल बिउहार ॥ (पन्ना ११४५)

इस अनूठे आचार को ग्रहण करने का साधन और उसके लिए आवश्यक नेतृत्व का माध्यम श्री गुरु नानक देव जी के इन कथनों के अनुसार ईश्वरीय शबद और सतिगुरु की शिक्षा बताया प्रतीत होता है :

--बिनु सबदै आचारु न किन ही पाइआ ॥
गुरमुखि ओअंकारि सचि समाइआ ॥ (पन्ना १२८५)
--गुर कउ जाणि न जाणई
किआ तिसु चजु आचारु ॥ (पन्ना १९)

इस तरह इस अध्यात्म रुचित और नाम-आधारित संस्कृति को 'नाम-आचार' या 'शबद-संस्कृति' कहना और मानना उचित एवं अनुकूल प्रतीत होता है। 'सिक्ख संस्कृति' भी तो वास्तव में यही सच्चा एवं शुद्ध ढंग-आचार ही है।

सिक्ख धर्म के अति पावन और शाश्वत सतिगुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सर्वश्रेष्ठ धर्म उस धर्म को माना गया है, जो हरि-सिमरन के अलावा शुभ आचार का भी विश्वासी और अनुयायी है :

सरब धरम महि स्रेसट धरमु ॥
हरि को नामु जपि निरमल करमु ॥
सगल क्रिआ महि ऊतम किरिआ ॥
साधसंगि दुरमति मलु हिरिआ ॥ (पन्ना २६६)

इसकी शिक्षा और संदेश का मूल केंद्र और मुख्य मनोरथ भी तो यही दोहरी व्यवहारिक क्रिया ही लगता है :-

पहली-- जीव-आत्मा (अर्थात् मानव) को परम-आत्मा (अर्थात् प्रभु) के साथ जोड़ना, जिसका साधन 'प्रेमा-भक्ति' बताया गया है।

दूसरी-- मानव को मानव के साथ जोड़ना और जोड़े रखना, जिसका साधन 'शुभ आचार' या 'सदाचार' दिखाया हुआ है।

इसके इस सिद्धांत और इस पर अमल के अनुसार इन दोनों क्रियाओं-- भक्ति और सदाचार का सुमेल ही जीवन की संपूर्णता, सफलता तथा कल्याणता की गारंटी लगता है :

गुण संतोखि रहहु जन भाई ॥
खिमा गहहु सतिगुर सरणाई ॥
आतमु चीनि परातमु चीनहु
गुर संगति इहु निसतारा हे ॥ (पन्ना १०३०)

अर्थात् सत्य, सब्र, आस्था और दया जैसे शुभ गुण धारण करते हुए सतिगुरु की शरण ग्रहण करते हुए, अंतरात्मा को समझ कर परमात्मा को अनुभव करते हुए गुरु की कृपा और नेतृत्व के कारण मुक्ति प्राप्त हो सकती है। इन दोनों क्रियाओं को एक दूसरे के पूरक और अभिन्न अंग बताते हुए श्री गुरु नानक देव जी और श्री गुरु अमरदास जी ने यह फरमान

Final

किया है कि अपने अंदर व्यवहारिक गुण पैदा कर नाम और भक्ति प्राप्त हो सकती है :

--विणु गुण कीते भगति न होई ॥ (पन्ना ४)
--साची बाणी सूचा होइ ॥
गुण ते नामु परापति होइ ॥ (पन्ना ३६१)

इस पवित्र और अद्वितीय धर्म-ग्रंथ (श्री गुरु ग्रंथ साहिब) के संपादक श्री गुरु अरजन देव जी ने भी इस अनूठी संस्कृति, नाम और सदाचार पर आधारित जीवन-जाच का नींव-पत्थर यही दोनों क्रियाएं बताते हुए इन दोनों पर एक-सा बल देते हुए और इनकी पैरवी लाज़िमी विदित करते हुए इस तरह समझाया है :

उसतति मन महि करि निरंकार ॥
करि मन मेरे सति बिउहार ॥ (पन्ना २८१)

इसीलिए इस संस्कृति के इन पवित्र संचालकों और प्रवक्ताओं ने परम-आत्मा (अर्थात् ईश्वर) के लिए 'पति' और जीव-आत्मा (अर्थात् मानव) के लिए 'पत्नी' के प्रतीक इस्तेमाल करते हुए हर मानव को इस बात का यकीन दिलाया है कि वह चाहे पुरुष हो या स्त्री, मुक्ति, मोक्ष, विसतारा या परमगति, वाहिगुरु की कृपा और सतिगुरु के नेतृत्व के कारण इसी जीवन के दौरान अपने सामाजिक ताने-बाने में विचरण करते हुए, साधारण घरेलू जीवन जीते हुए, प्रभु के भय व हुक्म में रहते हुए, शुभ गुण धारण करते हुए और नेक अमल करते हुए सहज ही प्राप्त कर सकता है :

--भाउ भगति करि नीचु सदाए ॥
तउ नानक मोखंतरु पाए ॥ (पन्ना ४७०)
--सतिगुर की ऐसी वडिआई ॥
पुत्र कलत्र विचे गति पाई ॥ (पन्ना ६६१)

परंतु शर्त यह है कि वह इस हिदायत-*-"विचे ग्रिह सदा रहै उदासी जिउ कमलु रहै विचि पाणी हे ॥"* के अनुसार जीवन और उसके फर्जों तथा जिम्मेदारियों से भागने के लिए सन्यास धारण करना या बनवास लेने की जगह संसार में रहते हुए बाकायदा जीते हुए तालाब में निरालम बस-रस रहे कमल और नदी में तैर रही मुरगाबी की तरह सांसारिकता से निर्लिप्त रह कर, उपरोक्त गाडीराह के मुताबिक अपना जीवन-निर्वाह इस तरह करता जाए :

जैसे जल महि कमलु निरालमु मुरगाई नै साणे ॥
सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ
नानक नामु वखाणे ॥ (पन्ना ९३८)

इस तरह यह संस्कृति न तो सिधों के प्रवृत्ति (भोग या राग) मार्ग की धारक है और न ही नाथों के निवृत्ति (योग या वैराग्य) मार्ग की अनुयायी है :

दोवै तरफा उपाइ इकु वरतिआ ॥
बेद बाणी वरताइ अंदरि वादु घतिआ ॥
परविरति निरविरति हाठा दोवै
विचि धरमु फिरै रैबारिआ ॥ (पन्ना १२८०)

अर्थात् वाहिगुरु संसारी और त्यागी वाली दोनों परतें पैदा कर उनमें खुद समाया हुआ है। इन दोनों में कोई झगड़ा तो होना नहीं चाहिए, परंतु वेद-बाणी के ख्याल चला कर इनके मध्य वाद-विवाद पैदा कर दिया गया है। तभी तो संसारी और त्यागी दोनों परतों में धर्म मार्गदर्शक और निर्णायक के रूप में विचरण कर रहा है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में विदित संस्कृति इन दोनों मार्गों के वाद-विवाद में पड़ने की जगह सांसारिकता और आध्यात्मिकता के ऐसे सुमेल अर्थात् सहज मार्ग की धारक है, जो एकदम सरल, स्वाभाविक, संतुलित और सर्वश्रेष्ठ जीवन-जाच का सूचक है। यह मानव जीवन के मूल सरोकारों तथा हितों से संबंधित है और इसका मुख्य मंतव्य मानव को आध्यात्मिक और सदाचारक नेतृत्व से आवश्यक सहायता करते हुए उसे सदा फला-फूला और चढ़दी कला में रखना है।

श्री गुरु नानक देव जी ने इस मंतव्य

Final

की पूर्ति के लिए मानव को दो अद्वितीय तीन-सूत्रीय फार्मूले प्रदान कर उनका व्यवहारिक प्रयोग समझाया हुआ है। पहले में नाम जपना, किरत करना और बांट कर छकने की हिदायत है। उन्होंने तो इस बात का भरोसा भी दिलाया हुआ है कि इस पर अमल करने और परमात्मा को हाज़िर-नाज़िर समझते हुए पाप छोड़ने तथा अवगुण त्यागने से न केवल उपरोक्त मार्ग की समझ ही प्राप्त हो जाती है, बल्कि नरक-निवास और उसकी यातनाओं से भी बचा जा सकता है :

--घालि खाइ किछु हथहु देइ ॥
नानक राहु पछाणहि सेइ ॥ (पन्ना १२४५)
--संगि देखै करणहारा काइ पापु कमाइऐ ॥
सुक्रितु कीजै नाम लीजै नरकि मूलि न जाईऐ ॥
(पन्ना ४६१)

ऐसी कृपा और इनके कर्त्ता की प्राप्ति के लिए या कोई धार्मिक मर्यादा निभाने के लिए जीवन तथा उसके कर्त्तव्यों एवं जिम्मेदारियों से विमुख होने, घर-बार त्यागने, भेस-पाखंड करने, जंगल-बेलों और पहाड़ी गुफायों में भटकने आदि की कोई ज़रूरत नहीं। श्री गुरु तेग बहादर साहिब के अनुसार सर्वव्यापक प्रभु सदा हमारे साथ, हमारे अंग-संग है। वह हमारे अंदर इस तरह बस रहा है, जैसे फूल में सुगंध और शीशे में छाया बस रही होती है। उसे बाहर ढूंढने की जगह अपने मन में से खोजने की नसीहत करते हुए उन्होंने इस तरह फरमाया है :

काहे रे बन खोजन जाई ॥
सरब निवासी सदा अलेपा तोही संगि समाई ॥१॥रहाउ॥
पुहप मधि जिउ बासु बसतु है
मुकर माहि जैसे छाई ॥
तैसे ही हरि बसे निरंतरि घट ही खोजहु भाई ॥
(पन्ना ६८४)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में विदित इस क्रियात्मक (Practical) संस्कृति और अनूठी जीवन-जाच द्वारा मानव को अपने मालिक प्रभु का नाम जपने के लिए घर-बार त्यागने या मौन धारण करके धूनी रमाने या हाथ पर हाथ रख कर बैठे रहने की जगह तन-मन से किरत-कमाई करने और उसका नाम जपने के लिए प्रेरित करते हुए फरमान है :

लाइ चितु करि चाकरी मंनि नामु करि कंमु ॥
(पन्ना ५९५)

इसके अलावा उसे भारी उत्साह और प्रोत्साहन देते हुए और सही तथा सरल जीवन-युक्ति बताते हुए प्रभु के साथ मेल-प्राप्ति और सुखी एवं निश्चित जीवन जीने का रास्ता भी इस तरह दिखाया हुआ है :

उदमु करेदिआ जीउ तूं कमावदिआ सुख भुंचु ॥
धिआइदिआ तूं प्रभू मिलु नानक उतरी चिंत ॥
(पन्ना ५२२)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में विदित आध्यात्मिकता और सांसारिकता, प्रवृत्ति और निवृत्ति, गृहस्थ और उदास तथा भक्ति और सदाचार के इस सुमेल एवं उसके व्यवहारिक प्रयोग से संबंधित यह संदेश और उपदेश केवल पंजाब या हिंदोस्तान के लिए ही नहीं, बल्कि समूह मानवता के सामाजिक जीवन और सांस्कृतिक विधान को भारी एवं यादगारी, क्रांतिकारी तथा कल्याणकारी देन है।

गृहस्थ जीवन की श्रेष्ठता, महानता और लाभदायकता को इस तरह उजागर करते हुए इसके केंद्र अर्थात् स्त्री के स्थान व सम्मान को भी जैसे प्रकट और प्रशंसित किया गया है, वह भी इस संस्कृति की एक बहुत अहम और अछूती देन है। सदियों से त्रिस्कारी और धिक्कारी हुई स्त्री जाति के असली स्थान एवं योगदान को जिस प्रकार श्री गुरु ग्रंथ साहिब में बयान किया हुआ है, वह भी अपनी मिसाल आप है। इसको मनुष्य जीवन की

Final

केवल पूर्णता ही नहीं आरंभता और पूरकता का भी सौभाग्य मानते हुए फरमान किया है :

पुरख महि नारि नारि महि पुरखा . . . ॥

(पन्ना ८७९)

अर्थात् स्त्री की निंदा और निरादर करने वालों तथा केवल लिंग-भेद के कारण उसके साथ अन्याय, दुरुपयोग एवं भेदभाव करने वालों को संबोधित करते हुए यह दलीलों और चुनौतियों भरी आवाज़ श्री गुरु ग्रंथ साहिब में ही इस तरह बुलंद है :

भंडि जंमीऐ भंडि निंमीऐ भंडि मंगणु वीआहु ॥
भंडहु होवै दोसती भंडहु चलै राहु ॥
भंडि मूआ भंडि भालीऐ भंडि होवै बंधानु ॥
सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥

(पन्ना ४७३)

अर्थात् स्त्री के गर्भ में ही मनुष्य का वजूद बनता है और स्त्री के उदर से ही वह जन्म लेता है। स्त्री के साथ ही मंगणी और विवाह होता है और स्त्री से ही संसार का रास्ता एवं रिश्ता चलता है अर्थात् मानव श्रेणी तथा मानव सभ्यता का सिलसिला जारी रहता है। स्त्री के साथ ही गृह-प्रबंध चलता है। उसी के द्वारा समाज की स्थापना होती है और उसी की हस्ती बरकरार रहती है। जिस स्त्री के उदर से महान और प्रतापी लोग (अवतार और पैगंबर, बादशाह और बहादुर इत्यादि) भी जन्म लेते हैं, उसे मंदा और बुरा क्यों कहा जाए और निचला तथा अपवित्र क्यों समझा जाए?

भंडहु ही भंडु ऊपजै भंडै बाझु न कोइ ॥
नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ ॥

(पन्ना ४७३)

याद रखो कि इतने गुणों की धारक स्त्री का जन्म भी स्त्री से ही होता है। उसके बिना किसी मानव की पैदाइश कभी न हुई है और न हो सकती है। जो पुरुष स्त्री को बुरा कहते हैं और निम्न मानते हैं वे खुद भी स्त्री से ही पैदा हुए होते हैं। वे स्त्री से पैदा होकर, उसी से पालन-पोषण करवा कर, उसे नीच, बुरा और अपवित्र कैसे कह सकते हैं? वे खुद उससे ज्यादा अच्छे और ऊंचे होने का दावा कैसे कर सकते हैं? हकीकत तो यह है कि केवल सत्य स्वरूप परमात्मा ही एकमात्र ऐसी हस्ती है जो 'सैभं' होने के कारण किसी स्त्री के बिना उत्पन्न और हर जगह बसा हुआ है। स्त्री के लिए ऐसी निंदा, घृणा, भेदभाव, अन्याय और अपमानजनक व्यवहार का कारण पुरुष का अहंकार, नफरत वृत्ति तथा अभिमानी रुचि बताया गया है और उसे इस तरह समझाया भी गया है :

--जा रहणा नाही ऐतु जगि
ता काइतु गारबि हंढीऐ ॥
मंदा किसै न आखीऐ पड़ि अखरु एहो बुझीऐ ॥

(पन्ना ४७३)

--सुणि गला गुर पहि आइआ ॥
नामु दानु इसनानु दिड़ाइआ ॥ (पन्ना ७३)

अर्थात् 'सचु धरमसाल' (सत्य पर आधारित सत्संग) की स्थिरता के बारे में आम लोगों में हो रही बातें सुनकर अगर कोई सतिगुरु के पास आया है तो उन्होंने उसे नाम जपने, बांट कर छकने और तन-मन से पवित्र रहने की शिक्षा दृढ़ करवा दी है।

इस प्रकार यह पवित्र त्रिवेणी और इससे संबंधित जीवन-जाच की पालना ही मानव की आत्मिक पवित्रता, मानसिक सुचेतता और शारीरिक स्वच्छता, अहंकार और विषय-विकारों की निवृत्ति अंत:मुक्ति और प्रभु-मिलन के लिए उत्तम तथा शुद्ध साधन है। इसके मुकाबले भांति-भांति के साधकों, योगियों, भोगियों, त्यागियों, फकीरों, जतियों, सतियों, पांधियों व ज्योतिषियों की तरफ से भिन्न-भिन्न युक्तियां और साधन इस तरह निष्फल साबित होते बताए हैं :

जोगी भोगी कापड़ी किआ भवहि दिसंतर ॥

Final

गुर का सबदु न चीन्हही ततु सारु निरंतर ॥३॥
पंडित पाधे जोइसी नित पड़हि पुराणा ॥
अंतरि वसतु न जाणन्ही घटि ब्रहमु लुकाणा ॥४॥
इकि तपसी बन महि तपु करहि
नित तीरथ वासा ॥
आपु न चीनहि तामसी काहे भए उदासा ॥५॥
इकि बिंदु जतन करि राखदे से जती कहावहि ॥
बिनु गुर सबद न छूटही भ्रमि आवहि जावहि ॥६॥
इकि गिरही सेवक साधिका गुरमती लागे ॥
नामु दानु इसनानु द्रिड़ु हरि भगति सु जागे ॥७॥
(पन्ना ४१९)

अर्थात् वे अपना घर-बार छोड़ कर प्रभु की खोज और मुक्ति की प्राप्ति के लिए उनकी तरह ही हरि-नाम और गुरु-उपदेश से विहीन तथा प्रभु की प्रेमा-भक्ति से वंचित होने के कारण देश-देशांतर में भटकते रहने के बावजूद परमात्मा को नहीं पहचानते; सदा पुराण पढ़ते-उच्चारण करते रहने के बावजूद अपने अंदर की वस्तु को नहीं जानते; जंगलों में तप करने और तीर्थों में बसने के बावजूद अपने आप को नहीं पहचानते। इसी तरह भटकते रहते हैं। इतना भी नहीं समझते कि वे किसके लिए, किस कारण उदासीन और त्यागी बने हुए हैं। उनके मुकाबले में वे गृहस्थी लोग हैं, जो सतिगुरु की शिक्षा लेकर उस पर अमल कर रहे हैं; हरि-नाम प्राप्त कर उसका अभ्यास कर रहे हैं; जीवन नेकी, नेक कमाई और लोक-भलाई में व्यतीत कर रहे हैं तथा तन-मन की पवित्रता के लिए शुभ आचरण और शुद्धता रूपी स्नान का सौभाग्य प्राप्त कर रहे हैं। इस प्रकार प्रेमा-भक्ति और निर्मल करनी का सदका सचेत और अपने निश्चय एवं निशाने पर दृढ़ रह कर सुखी-सुविधाजनक विचरण कर रहे हैं।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में उपदेशित यह जीवन-जाच और नाम-आधारित संस्कृति तथा इसका दूसरा मुख्य अंग, सदाचार, किसी उपरोक्त त्यागी, वैरागी, भांजवादी या एकांतवादी मानव की जगह हर समय और स्थान के जनसाधारण, संसारी तथा गृहस्थी मानव व उसके दैनिक जीवन से संबंधित है। साथ ही यह केवल व्यक्तक ही नहीं, बल्कि उसके सामूहिक जीवन के साथ भी ताल्लुक रखता है। इसके विधान में ऊपर वर्णित गृहस्थ जीवन को शुद्ध, सुखी और बराबर-सपाट रखने के लिए पर-स्त्री-गमन और पर-पुरुष के साथ रहने की सख़्त मनाही है, क्योंकि यह अवगुण केवल आचरण के लिए ही नहीं, बल्कि सामाजिक मर्यादा के लिए भी अति हानिकारक है। पांचवे पातशाह ने इसी लिए इसकी ज़हरीले सांप के डंक के साथ तुलना की है :

जैसा संगु बिसीअर सिउ है रे
तैसो ही इहु पर ग्रिहु ॥ *(पन्ना ४०३)*

इस घोर पाप और कुरहित से मना करते हुए, धर्मराज का डरावा देते हुए और चित्रगुप्त की लेखा-मांग से भी खबरदार करते हुए फरमान किया है :

--रे नर काइ पर ग्रिहि जाइ ॥
कुचल कठोर कामि गरधभ तुम नहीं सुनिओ धरम राइ ॥ *(पन्न १००१)*
--देइ किवाड़ अनिक पड़दे महि
पर दारा संगि फाकै ॥
चित्र गुपतु जब लेखा मागहि
तब कउणु पड़दा तेरा ढाकै ॥ *(पन्ना ६१६)*

ऐसी मनाही और चेतावनी केवल पराए पुरुष और पराई स्त्री के साथ कुसंग करने पर ही नहीं, बल्कि हर पराई वस्तु के दुरुपयोग या नाजायज कब्ज़े पर भी लागू है, जैसे :

पर धन पर दारा पर निंदा इन सिउ प्रीति निवारि ॥ *(पन्ना ३७९)*
--हकु पराइआ नानका उसु सूअर उसु गाइ ॥

Final

गुरु पीरु हामा ता भरे जा मुरदारु न खाए ॥
(पन्ना १४१)
--वसतु पराई अपुनी करि जानै हउमै विचि दुखु घाले ॥ (पन्ना १३९)

इसके साथ ही ऐसी सदाचारक नसीहतें भी इस तरह की हुई हैं, जो सामाजिक रिश्ते और सांस्कृतिक मूल्य कायम रखने के लिए अति ज़रूरी हैं, जैसे :

--पराई अमाण किउ रखीऐ दिती ही सुखु होइ ॥
(पन्ना १२४९)
--सो किछु करि जितु मैलु न लागै ॥
(पन्ना १९९)
--जे जीवै पति लथी जाइ ॥
सभु हरामु जेता किछु खाइ ॥ (पन्ना १४२)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब के सदाचारक तथा सांस्कृतिक विधान में ऐसे गुण ग्रहण करने और अवगुण त्यागने पर काफी बल दिया गया है। सच्चा, निर्मल और सुखदाई जीवन जीने के लिए अवगुणों एवं विषय-विकारों से बचने के लिए जगह-जगह उपदेश दर्ज है :

--बोलीऐ सचु धरमु झूठु न बोलीऐ ॥
(पन्ना ४८८)
--छोडहु काम क्रोधु बुरिआई ॥
हउमै धंधु छोडहु लपटाई ॥ (पन्न १०२६)
--पर दारा पर धनु पर लोभा
हउमै बिखै बिकार ॥
दुसट भाउ तनि निंद पराई कामु क्रोधु चंडार ॥
(पन्ना १२५५)
--नर अचेत पाप ते डरु रे ॥ (पन्ना २२०)
--नानक अउगुण जेतड़े तेते गली जंजीर ॥
जे गुण होनि त कटीअनि से भाई से वीर ॥
(पन्ना ५९५)

इसके विपरीत इनसे कभी कतराने से सुख ही सुख नसीब होते बताया है :

परहरि पापु पछाणै आपु ॥
ना तिसु सोगु विजोगु संतापु ॥ (पन्ना ९३५)

अवगुणों के मुकाबले शुभ गुण धारण करने के लिए भी इसी तरह की बहुत ज़ोरदार प्रेरणा की हुई है, जैसे :

--मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु ॥
(पन्ना ४७०)
--सचै मारगि चलदिआ उसतति करे जहानु ॥
(पन्ना १३६)
--मंदा मूलि न कीचई दे लंमी नदरि निहालीऐ ॥
(पन्ना ४७४)
--जिथै जाइ बहीऐ भला कहीऐ..॥ (पन्ना ५६६)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में विदित एवं उपदेशित यह संस्कृति इस सिद्धांत का भी अनुसरण करने वाली है कि मनुष्य में गुण और अवगुण शुरू से ही मौजूद हैं। मनुष्य की शक्तियों, इच्छाओं और भावनाओं का संयमी और सुयोग्य इस्तेमाल गुण बना देता है और अयोग्य, असमतोल और अस्वाभाविक प्रयोग या दुरुपयोग अवगुणों का रूप दे देता है :

अवगुणी भरपूर है गुण भी वसहि नालि ॥
(पन्ना ९३६)

जैसे पुण्य और पाप धर्म-शास्त्र के संकेत हैं, उसी तरह गुण और अवगुण आचार-शास्त्र के संकेत हैं। मानव का लोक और परलोक संवारने के लिए शुभ गुणों का ग्रहण और अवगुणों का त्याग हर समय व स्थिति की बुनियादी ज़रूरत और मांग है। मानव को अवगुण छोड़ने और गुण ग्रहण करने तथा दूसरों के साथ उनकी सांझ स्थापित करने के लिए भी प्रेरित करते हुए इस तरह फरमान किया है :

--अउगण छोडहु गुण करहु ऐसे ततु परावहु ॥
(पन्ना ४१८)
--जे गुण होवन्हि साजना मिलि साझ करीजै ॥
साझ करीजै गुणह केरी छोडि अवगण चलीऐ ॥
(पन्ना ७६५-६६)

Final

इस बात का यकीन भी दिलाया गया है कि इस तरह करने से ऐसे अवगुण मानव का पीछा अपने आप छोड़ देते हैं :

--गुणा की रासि संग्रहै अवगण कढै विडारि ॥
(पन्ना १०८७)
--गुण संग्रहु विचहु अउगुण जाहि ॥
पूरे गुर कै सबदि समाहि ॥ (पन्ना ३६१)

यह कार्य गुरु के शबद में समाने के अलावा उत्तम संगत का सौभाग्य मानने से भी भली-भांति पूरा किया जा सकता है :

ऊतम संगति ऊतमु होवै ॥
गुण कउ धावै अवगण धोवै ॥ (पन्ना ४१४)

शुभ गुणों के धारक मानव जब अपने में मिलते-जुलते हैं तो शुभ गुणों की सांझ पाकर वे और गुणवान तथा लाभप्रद हो जाते हैं :

--गुणी गुणी मिलि लाहा पावसि
गुरमुखि नामि वडाई ॥ (पन्ना ११२७)
--गुण ते गुण मिलि पाईऐ
जे सतिगुर माहि समाइ ॥ (पन्ना १०८७)

वे केवल खुद ही लाभप्रद नहीं होते, बल्कि दूसरों को भी उपदेशित करते हुए गुणवान और भाग्यवान बना देते हैं :

गुणकारी गुण संघरै अवरा उपदेसेनि ॥
से वडभागी जि ओना मिलि रहे
अनदिनु नामु लएनि ॥ (पन्ना ७५५)

शुभ गुणों की ऐसी सांझ परस्पर सुख-आनंद का स्रोत और प्रभु-मिलन का साधन भी बन जाती है :

--गुण की साझ सुखु उपजै सची भगति करेनि ॥
(पन्ना ७५६)
--गुणीआ गुण ले प्रभ मिले
किउ तिन मिलउ पिआरि ॥ (पन्ना ९३६)

इसके विपरीत ऐसे गुणों से विहीन और अवगुणहार लोग ईश्वर के साथ मेल प्राप्त करना तो दूर रहा, विषय-विकारों में ग्रस्त दुखी होकर ही मर जाते हैं :

--जिन गुण तिन सद मनि वसै अउगुणवंतिआ दूरि ॥
मनमुख गुण तै बाहरे बिनु नावै मरदे झूरि ॥
(पन्ना २७)
--गुण विहूण माइआ मलु धारी ॥
विणु गुण जनमि मुए अहंकारी ॥ (पन्ना ३६७)

इस संस्कृति के विधान के अनुसार उनको अर्थात् अवगुणहारों को मारने के बाद अपने ऐसे अवगुणों और मंद कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ता है, क्योंकि :

--मंदा चंगा आपणा आपे ही कीता पावणा ॥
(पन्ना ४७०)
--जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु ॥
(पन्ना १३४)
--दुनीआ दोसु रोसु है लोई ॥
अपना कीआ पावै सोई ॥ (पन्ना ११६१)

कमाल यह है कि इस दुखदायी मौत और लेखे-जोखे से छूट मिलने का रास्ता भी साथ ही बता दिया गया है, जो जीते-जी अपने पिछले अवगुणों के त्याग, पश्चाताप और प्रभु के आगे की ऐसी प्रार्थनाएं करने में इस तरह विदित है :

--किरपा करहु दीन के दाते मेरा गुणु अवगुणु न बीचारहु कोई ॥
माटी का किआ धोपै सुआमी माणस की गति एही ॥
(पन्ना ८८२)
--मानु करउ तुधु ऊपरे मेरे प्रीतम पिआरे ॥
हम अपराधी सद भूलते तुम्ह बखसनहारे ॥१॥ रहाउ ॥
हम अवगन करह असंख नीति तुम्ह निरगुन दातारे ॥
दासी संगति प्रभू तिआगि ए करम हमारे ॥२॥
तुम्ह देवहु सभु किछु दइआ धारि हम अकिरतघनारे ॥
लागि परे तेरे दान सिउ नह चिति खसमारे ॥३॥

Final

तुझ ते बाहरि किछु नही भव काटनहारे ॥
कहु नानक सरणि दइआल गुर लेहु मुगध उधारे ॥४॥
(पन्ना ८०९)

ऐसा आचार-विधान ही इस विलक्षण जीवन-युक्ति और संस्कृति का मूल आधार प्रतीत होता है। इसने तो सत्य की कमाई पर ज़ोर देते हुए सच्चे-शुद्ध आचार-व्यवहार को सच्चाई पर भी प्राथमिकता देने और सामाजिक आदर्श प्रदान करने की भी क्रांतिकारी पहल की हुई है :

जिसु सरब सुखा फल लोड़ीअहि सो सचु कमावउ ॥
(पन्ना ३२२)

क्योंकि :

मनहठ बुधी केतीआ केते बेद बीचार ॥
केते बंधन जीउ के गुरमुखि मोख दुआर ॥
सचहु ओरै सभु को उपरि सचु आचारु ॥
(पन्ना ६२)

अर्थात् अपने मन की हठ वाली अक्लें चाहे अनेक हों और वेदों-शास्त्रों के पढ़े-सुने विचार भी चाहे कई हों, इस तरह के चाहे कई और प्रयत्न भी किए जाएं, परंतु वे सभी आत्मा के लिए बंधन बन जाते हैं। मुक्ति का द्वार तो केवल गुरु द्वारा ही मिलता है। परम सत्य से सब कुछ नीचे है। सत्य से भी ऊंची सत्य की रहिणी अर्थात् शुभ आचार-व्यवहार है, जो लोक-परलोक में विजय-प्राप्ति का सफल साधन है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में विदित और उपदेशित संस्कृति का एक और विशेष अंश सेवा है। सृजनहार वाहिगुरु की सेवा मार्गदर्शक सतिगुरु की सेवा, साथी मनुष्यों की सेवा। जहां तक वाहिगुरु और सतिगुरु की सेवा का सम्बंध है, उसके लिए हरि-सिमरन और हरि-यश-गायन करने की ताकीद की हुई है :

--सरब मनोरथ जे को चाहै सेवै एकु निधाना ॥
पारब्रहम सीमा अपरंपर सुआमी सिमरत पार पराना ॥
(पन्ना ६७२)
-सचा सतिगुरु सेवि सचु सम्हालिआ ॥
(पन्ना १२८४)
--गुर सेवा बिनु भगति न होवी किउ करि चीनसि आपै ॥
(पन्ना १०१३)

नौवें पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब के अनुसार :

सरब धरम मानो तिह कीए जिह प्रभ कीरति गाई ॥
(पन्ना ९०२)

उस मानव ने मानो सभी धर्म-कर्म कर लिए होते हैं जिसने परमात्मा का यश गायन किया होता है। परमात्मा का सिमरन और प्रशंसा करनी इसी लिए भी ज़रूरी बतायी हुई है कि यह मानव को कृतघ्नता से भी बचाती है :

--जिस का दीआ पैनै खाइ ॥
तिसु सिउ आलसु किउ बनै माइ ॥ (पन्ना १९५)
--सो किउ मनहु विसारीऐ जा के जीअ पराण ॥
तिसु विणु सभु अपवित्र है जेता पैनणु खाणु ॥
(पन्ना १६)

इस संस्कृति के मानक के मुताबिक केवल वही सेवा उत्तम, सफल, सकारथी और स्वीकृत है जो तन-मन से खुशी-खुशी की जाती है और जो हरि के नाम के साथ हमारा चित्त जोड़ती है :

--निगुणिआ नो आपे बखसि लए भाई
सतिगुर की सेवा लाइ ॥
सतिगुर की सेवा ऊतम है भाई
राम नामि चितु लाइ ॥ (पन्ना ६३८)
--सतिगुर की सेवा सफलु है
जे को करे चितु लाइ ॥
मनि चिंदिआ फलु पावणा हउमै विचहु जाइ ॥
(पन्ना ६४४)

ऐसी सेवा किए बिना फल की कोई आशा रखनी भी व्यर्थ है :

जेते जीअ तेते सभि तेरे

Final

विणु सेवा फलु किसै नाही ॥ (पन्ना ३५४)

सिमरन के साथ सेवा को इसलिए जोड़ दिया गया लगता है कि सेवा करने से मानवीय मन संतुलित और सहनशील रहता है। मानव के स्वभाव में नम्रता और जुबान में मिठास आ जाती है और वह ईश्वर की रज़ा में राज़ी रहते हुए उसकी कृपा का पात्र बना रहता है। यह सेवा और हुक्म की पालना ही उसे प्रभु और परम पद की प्राप्ति का हिस्सेदार बना देती है :

--सेवक कउ सेवा बनि आई ॥
हुकमु बूझि परम पदु पाई ॥ (पन्ना २९२)
--हुकमु बूझै सो सेवकु कहीऐ ॥
बुरा भला दुइ समसरि सहीऐ ॥ (पन्ना १०७६)

इसके विपरीत मान-अभिमान में गलतान इंसान को 'सेवक' कभी नहीं कहा या माना जा सकता :

मान अभिमान मंधे सो सेवक नाही ॥ (पन्ना ५१)

इसके साथ ही गिनती-मिनती की विचार करते हुए या अहंकार में विचरते हुए सेवा सफल नहीं होती बतायी गई है :

--गणतै सेव न होवई कीता थाइ न पाइ ॥
(पन्ना १२४६)
--विचि हउमै सेवा थाइ न पाए ॥ (पन्ना १०७०)

श्री गुरु नानक देव जी के अनुसार प्रभु की प्राप्ति भी ऐसी सेवा किए बिना मुमकिन नहीं :

बिनु सेवा किनै न पाइआ दूजै भरमि खुआई ॥
(पन्ना १०११)

इसीलिए गुरु साहिब ने इस लोक अर्थात् दुनिया में अपना जीवन सफल करने और परलोक अर्थात् आगे वाली दुनिया में ईश्वर के दरबार में सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त कर आत्मिक आनंद प्राप्त करने के लिए ऐसी सेवा को ही सफल साधन बताते हुए इस तरह फरमान किया है :

विचि दुनीआ सेव कमाईऐ ॥
ता दरगह बैसणु पाईऐ ॥
कहु नानक बाह लुडाईऐ ॥ (पन्ना २६)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में प्रज्वलित ऐसी उदार, सर्वसांझी और सर्वहितकारी संस्कृति को प्रफुल्लित एवं प्रसारित करने के लिए जो विधि और युक्ति बतायी गई है, वह मानव को मानव के साथ जोड़ने और जुड़े रखने तथा परस्पर वैर-विरोध मिटाने के लिए वाद-विवाद की जगह सद्भावना और सर्वसांझ दृढ़ कराने वाले संवाद, गोष्ठि, वार्तालाप या विचार-विमर्श की धारक है।

इसके पवित्र संचालक ने तो इसकी ज़रूरत और लाभ को मुख्य रखते हुए खुद भी यही युक्ति इस्तेमाल की थी, जैसे कि उनकी बाणी 'सिध गोसटि' से भी विदित है। उन्होंने तो हर मानव को यही विधि अपनाने के लिए प्रेरित करते हुए बड़े स्पष्ट शब्दों में इस तरह समझाया भी है :

जब लगु दुनीआ रहीऐ नानकु
किछु सुणीऐ किछु कहीऐ ॥ (पन्ना ६६१)

क्योंकि श्री गुरु नानक देव जी के निम्नलिखित कथनानुसार इसमें उलझने से बड़े हानिकारक वैर, विरोध और झगड़े पैदा हो जाते हैं :

कलहि बुरी संसारि वादे खपीऐ ॥ (पन्ना १४२)

श्री गुरु अमरदास जी के वचन के मुताबिक इनमें उलझने का लाभ भी तो कोई नहीं, क्योंकि :

वादि विरोधि न पाइआ जाइ ॥
मनु तनु फीका दूजै भाइ ॥ (पन्ना २३०)

कमाल यह भी है कि श्री गुरु अमरदास जी ने ऐसी नसीहत करते हुए और ऐसे वैर-विरोध और वाद-विवाद से बचने का रास्ता बताते हुए इस तरह फरमान किया है :

बादी बिनसहि सेवक सेवहि गुर कै हेति पिआरी ॥
(पन्ना ९११)

संवादी विधि-विधान पर अमल करने के लिए यह मान लेना अति ज़रूरी है कि सारे मनुष्य

Final

एक ही सृजनहार की उपज हैं, इसी लिए वे एक समान और एक दूसरे के बहन-भाई हैं :

-एक पिता एकस के हम बारिक . . . ॥
(पन्ना ६११)

--ऐ जी ना हम उतम नीच न मधिम
हरि सरणागति हरि के लोग ॥ (पन्ना ५०४)

और इसी कारण उन सभी का इष्ट और धर्म-ईमान भी एक ही है :

--कहु नानक गुरि खोए भरम ॥
एको अलहु पारब्रहम ॥ (पन्ना ८९७)
-एको धरमु द्रिड़ै सचु कोई ॥
गुरमति पूरा जुगि जुगि सोई ॥ (पन्ना ११८८)

इसी अटल सच्चाई को स्वीकार करते हुए हर मानव को यह समझना, मानना और एलान करना भी पड़ेगा :

--सभे साझीवाल सदाइनि तू किसै न दिसहि बाहरा जीउ ॥ (पन्ना ९७)
--ना को बैरी नही बिगाना
सगल संगि हम कउ बनि आई ॥ (पन्ना १२९९)

इसी लिए इस ऐलान को अमली जामा पहनाने के लिए किसी पराए और अनजान मानव के साथ भी गलत व्यवहार करने की सोच मन से मिटा देनी पड़ेगी :

पर का बुरा न राखहु चीत ॥
तुम कउ दुख नही भाई मीत ॥ (पन्ना ३६८)

सारी मानवता को अपना सज्जन-संबंधी देखने-मानने का स्वभाव बनाने की प्रेरणा भी इस तरह दर्ज है :

मन अपुने ते बुरा मिटाना ॥
पेखै सगल स्रिसटि साजना ॥ (पन्ना २६६)

इनकी पालना के साथ-साथ जीवन-उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उस जीवन-युक्ति पर भी अमल करना ज़रूरी बताया हुआ है जो इस पवित्र और अद्वितीय ग्रंथ के संपादक श्री गुरु अरजन देव जी ने इस तरह दर्ज की हुई है :

संचि हरि धनु पूजि सतिगुरु छोडि सगल विकार ॥
जिनि तूं साजि सवारिआ हरि सिमरि होइ उधारु ॥
(पन्ना ५१)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में विदित और उपदेशित इस संस्कृति के विधान और आदर्श के अनुसार मानव के लिए ऐसे बुनियादी गुणों का धारक होने के अलावा समदृष्टि और परोपकारी होना भी ज़रूरी है :

--एक द्रिसटि करि समसरि जाणै
जोगी कहीऐ सोई ॥ (पन्ना ७३०)
--ब्रहम गिआनी कै द्रिसटि समानि ॥
जैसे राज रंक कउ लागै तुलि पवान ॥
(पन्ना २७२)

उस मानव का शरीर ही निष्फल बताया हुआ है जो परोपकार करने में तत्पर नहीं होता, लोक-भलाई के कामों में शामिल नहीं होता और ज़रूरतमंदों की आवश्यक सहायता नहीं करता :

मिथिआ तन नही परउपकारा ॥ (पन्ना २६९)

श्री गुरु अरजन देव जी के अनुसार परमात्मा को जानने और याद करने वाला आदर्श मानव तो हर किसी पर दयावान होता है। उससे किसी का किसी तरह का बुरा नहीं होता। वह हमेशा सबको एक जैसा देखने वाला होता है और उसकी नज़र हर किसी के लिए सुख, शांति एवं खुशी बरसाने वाली होती है। उसके हृदय में विनम्रता और नम्रता समाई रहती है और परोपकार की स्वाभाविक इच्छा बनी रहती है अर्थात् जैसे कोई चश्मा इच्छित जल देता रहता है, उसी तरह उसके हृदय से परोपकार भी स्वाभाविक फूटता और गिरता रहता है :

ब्रहम गिआनी की सभ ऊपरि मइआ ॥
ब्रहम गिआनी ते कछु बुरा न भइआ ॥
ब्रहम गिआनी सदा समदरसी ॥
ब्रहम गिआनी की द्रिसटि अंम्रितु बरसी ॥

Final

ब्रहम गिआनी बंधन ते मुकता ॥
ब्रहम गिआनी की निरमल जुगता ॥
ब्रहम गिआनी का भोजनु गिआन ॥
नानक ब्रहम गिआनी का ब्रहम धिआनु ॥३॥
ब्रहम गिआनी एक ऊपरि आस ॥
ब्रहम गिआनी का नही बिनास ॥
ब्रहम गिआनी कै गरीबी समाहा ॥
ब्रहम गिआनी परउपकार उमाहा ॥ (पन्ना २७३)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में ऐसे जीवन-मूल्य और ऐसे सदाचारक एवं सांस्कृतिक गुणों का धारक मानव चढ़दी कला और सरबत्त के भले वाले सिक्खी-सिद्धांतों का आदर्श नमूना, प्रतिनिधि और प्रवर्तक होता है। वह सही अर्थों में नि:स्वार्थी होता है। वह हर किसी का भला चाहने में ही अपना भला समझता है और पराए हित को अपना हित समझता है। वह अपने साथी मनुष्यों के हृदय में भी हरि का नाम बसाता है। उनके सारे अवगुण दूर करके परोपकार का भागीदार बनाता है और उनको ऐसी युक्ति तथा रहमत प्रदान कर सदा चढ़दी कला में बनाए रखता है :

साजनु बंधु सुमित्रु सो हरि नामु हिरदै देइ ॥
अउगण सभि मिटाइ कै परउपकारु करेइ ॥
(पन्ना २१८)

इस तरह श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संचालित संस्कृति और उसके संग्रह का सरोकार मानव की केवल व्यक्तिगत भलाई तथा विकास तक ही सीमित नहीं, यह तो उसकी समूह जाति की सामूहिक भलाई, उन्नति और प्रफुल्लता का भी इच्छुक और उसके लिए यत्नशील है। इसमें मनुष्य जीवन के किसी भी पक्ष-पहलू को, किसी भी श्रेणी-व्यक्ति को आंखों से ओझल नहीं किया गया। यह हर समय, स्थिति और स्थान; हर देश, कौम, रंग-नस्ल और मत-सिद्धांत आदि के साथ जुड़े हुए मानव की आध्यात्मिक भावना, सदाचारक मर्यादा और सांस्कृतिक परंपरा से संबंधित है। यह इसलिए कि यह इस संस्कृति के पवित्र संचालकों के निम्नलिखित एलानिया कथनों में दर्ज इस दृढ़ विश्वास का अनुसरण करने वाला है :

--सभु को ऊचा आखीऐ नीचु न दीसै कोइ ॥
इकनै भांडे साजिऐ इकु चानणु तिहु लोइ ॥
(पन्ना ६२)

--ना को मेरा दुसमनु रहिआ
ना हम किस के बैराई ॥
ब्रहमु पसारु पसारिओ भीतरि
सतिगुर ते सोझी पाई ॥२॥
सभु को मीतु हम आपन कीना
हम सभना के साजन ॥ (पन्ना ६७१)

इसी लिए इनके द्वारा सारी सृष्टि के सृजनहार परमात्मा को की हुई ऐसी अपीलें और प्रार्थनायें सारे जगत और समूह मानवता के लिए भरपूर अन्न-जल की बख़्शिश, उनके दुख-कष्ट की निवृत्ति, उनकी सुख-शांति और भले के निपटारे के लिए सनम्र मांगों के साथ संबंध रखती हैं :

--किरपा करि कै सुनहु प्रभ सभ जग महि वरसै मेहु ॥ (पन्ना ६५२)
--जगतु जलंदा रखि लै अपणी किरपा धारि ॥
जितु दुआरै उबरै तितै लैहु उबारि ॥ (पन्ना ८५३)
--सभे जीअ समालि अपणी मिहर करु ॥
अंनु पाणी मुचु उपाइ दुख दालदु भंनि तरु ॥
(पन्ना १२५१)

इस तरह श्री गुरु ग्रंथ साहिब में विदित और उपदेशित यह संस्कृति और इससे संबंधित संदेश व उपदेश इनमें ही अंकित इस तसदीक के मुताबिक सर्वकालीय, सर्वदेशीय, सर्वसांझा और सर्वहितकारी है :

परथाइ साखी महा पुरख बोलदे
साझी सगल जहानै ॥ (पन्ना ६४७)

तभी तो यह, इसके संचालक और संग्रह विलक्षण हैं, महत्त्वपूर्ण हैं, अपनी मिसाल आप हैं।

Final

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की छंद-शास्त्र को उत्कृष्ट देन

*-स. निरवैर सिंघ अरशी**

'जापु' बाणी का पाठ सिक्खों की नित्तनेम की बाणियों में सम्मिलित है। इस बाणी के पाठ का समय प्रातः काल निर्धारित है।

'जापु' बाणी की विषय-वस्तु : अपने इष्ट, अकाल पुरख के विभिन्न कर्मी रूपों और गुणों का स्मरण, स्तुति एवं वंदना है। गुरु जी अकाल पुरख के निराकार रूपों को विविध विशेषणों से संबोधित करते हुए उसे नमस्कार करते हैं। अकाल पुरख की वंदना करते हुए श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी उसे अजन्मा, निराधार, निराकार, दयालु, राज़क, रहीम, करीम, रफीक, सर्वव्यापक, समस्त विश्व का सृजनहार तथा संहारकर्ता बताते हैं। ऐसे अकाल पुरख की न कोई जाति है, न ही कोई पांत है; न कोई माता है, न ही पिता न कोई पुत्र है, न ही पौत्र; न कोई मित्र है, न ही शत्रु और न ही उसका कोई धर्म (मज़हब) है। वह स्वयं ही है। वह अंधकार, प्रकाश, जीव, प्रकृति एवं ज्ञान का कर्त्ता है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ऐसे अकाल पुरख को पुनः-पुनः नमस्कार करते हैं।

'जापु' बाणी में छंद : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने निराकार, सर्वव्यापक, सच्चिदानंद, अकाल पुरख का 'जापु' बाणी में अति सुंदर निरूपण किया है तथा उसके यशगायन के लिए भिन्न-भिन्न छंदों का प्रयोग किया है। 'जापु' आकार रूप से छोटी बाणी है। इस बाणी में २१ छंद, १९९ बंद हैं। इन छंदों की भाषा हिंदी, संस्कृत, फारसी तथा अरबी का मिश्रण है।

इस बाणी में छपै, भुजंग प्रयात, चाचरी, चरपट, रूआल, मधुभार, भगवती, रसावल, हरिबोलमना तथा एक अछरी छंद का प्रयोग किया गया है। अधिकतर भुजंग प्रयात (६५ बंद), भगवती (४१ बंद) तथा चाचरी (३२ बंद) के रूपों का प्रयोग हुआ है। जहां कहीं छंद-विशेष के एक से अधिक रूप मिलते हैं वहां श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने लगभग उन सभी छंद-रूपों का प्रयोग किया है, जैसे कि :

१) चाचरी छंद** :

(क) सुधी- *अलेख हैं ॥ अभेख हैं ॥*
अनाम हैं ॥ अकाम हैं ॥३०॥

(ख) शशी- *गुबिंदे ॥ मुकंदे ॥*
उदारे ॥ अपारे ॥९४॥

२) एक अछरी छंद :

(क) मही- *अजै ॥ अलै ॥*
अभै ॥ अबै ॥१८९॥

(ख) मृगेंद्र- *अकाल ॥ दिआल ॥*
अलेख ॥ अभेख ॥१९२॥

(ग) शशी- *न रागे ॥ न रंगे ॥*
न रूपे ॥ न रेखे ॥१९५॥

छंदों के नए उपभेद : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपने आपको परंपरागत छंदों में जकड़े रखना पसंद नहीं किया। गुरु जी ने अवसर मिलने पर एक छंद के कई नए उपभेद बनाये

**श्री छंद : प्रभाकर, जगन्नाथ प्रसाद, बिलासपुर, १९३१*
गुरु छंद दिवाकर, भाई कान्ह सिंघ नाभा, श्री अमृतसर, १९२४

**१/३१५, मोहल्ला केसगढ़ साहिब, श्री अनंदपुर साहिब-१४०११८ (ज़िला रूपनगर)*

Final

एवं उनका 'जापु' बाणी में प्रयोग किया।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के काव्य-कौशल के कुछ उदाहरण उनके अपने बनाए हुए चाचरी छंद तथा एक अछरी छंद के नए उपभेदों के प्रयोग 'जापु' में भली-भांति मिलते हैं।

'जापु' बाणी में चाचरी एवं एक अछरी छंदों के जो अतिरिक्त उपभेद मिलते हैं, वे इस प्रकार हैं :

१) चाचरी छंद :

(क) *अरूप हैं ॥ अनूप हैं ॥*
अजू हैं ॥ अभू हैं ॥२९॥

उपभेद (क) के पहले व दूसरे चरणों के प्रति चरण, लक्षण सुधी रूप-- यगण, गुरु (ISI,S) के हैं। तीसरे व चौथे चरणों के प्रति चरण, लक्षण शशी रूप--यगण (ISS) के हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने यहां छंद (क) का रूप तो चाचरी का ही रखा है, परंतु सुधी तथा शशी रूपों के मिश्रण से चाचरी छंद का एक नया उपभेद प्रस्तुत कर दिया है।

(ख) *अघे हैं ॥ अभे हैं ॥*
अजीत हैं ॥ अभीत हैं ॥३१॥

इस छंद के पहले एवं दूसरे चरणों के प्रति चरण, लक्षण तो शशी रूप के हैं, परंतु तीसरे तथा चौथे चरणों के प्रति चरण, लक्षण सुधी रूप के हैं। इस प्रकार छंद (ख) के लक्षण उपभेद (क) के विपरीत हैं।

(ग) *अनील हैं ॥ अनादि हैं ॥*
अजे हैं ॥ अजादि हैं ॥३३॥

इस शबद के पहले व दूसरे चरणों से ज्ञात होता है कि यह सुधी रूप का चाचरी छंद है। तीसरे चरण का लक्षण शशी रूप--ISS--का है। चौथे चरण का लक्षण फिर सुधी रूप--ISI,S--का है। इस प्रकार पूरे उपभेद (ग) का लक्षण यगण, गुरु; यगण, गुरु; यगण; यगण, गुरु-ISI,S;ISI,S;ISS;ISI,S-बन गया है।

(घ) *जले हैं ॥ थले हैं ॥*
अभीत हैं ॥ अभे हैं ॥६२॥

इस छंद के लक्षण उपभेद (ग) के विपरीत हैं। यहां पहले व दूसरे चरणों के प्रति चरण, लक्षण शशी रूप के हैं। तीसरे चरण का लक्षण सुधी चरण का है। अत: चौथे चरण का लक्षण फिर शशी रूप है। इस प्रकार छंद उपभेद (घ) का लक्षण यगण; यगण; यगण, गुरु; यगण--ISS;ISS;ISI,S;ISS--बन गया है।

२) एक अछरी छंद :

(अ) *अभू ॥ अजू ॥*
अनास ॥ अकास ॥१९०॥

उपभेद (अ) के पहले व दूसरे चरणों के लक्षण, प्रति चरण, मही रूप (IS) के हैं। तीसरे व चौथे चरणों के लक्षण, प्रति चरण, मृगेंद्र रूप के हैं।

छंदों के उपभेदों की संज्ञा : उदाहरण (क), (ख), (ग), (घ) तथा (अ) के अध्ययन से भली-भांति ज्ञात हुआ कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने छंदों के पारिभाषिक लक्षणों में अपने-आपको बांधना नहीं चाहा। गुरु जी ने परंपरागत छंदों के स्थान पर नए उपभेद बनाकर अपनी बाणी 'जापु' में प्रयोग किए हैं। इस निष्कर्ष की पुष्टि ऊपर दिए चाचरी छंद के उपभेदों (क), (ख), (ग), (घ) एवं एक अछरी छंद के उपभेद (अ) से होती है।

क्योंकि इन नए उपभेदों से हम अपरिचित हैं, इसलिए इन्हें कोई संज्ञा भी देनी ही होगी। साधारणत: ये नाम उन उपभेदों के नाम पर रखे जा सकते हैं जिनके सुमेल से ये नए उपभेद उत्पन्न हुए। सुधी व शशी के मिश्रण से तीन नए रूप संभव हैं। इन तीनों नए उपभेदों को सुधी-शशी की संज्ञा नहीं दी जा सकती।

Final

गुरबाणी के अनुसार सुखी जीवन की प्राप्ति

*-डॉ. बेअंत सिंघ शीतल**

संसार के प्रत्येक मनुष्य की हार्दिक अभिलाषा होती है कि वह हमेशा आनंद से भरपूर सुखी जीवन व्यतीत करे। इस निश्चिंततापूर्वक प्रसन्न एवं सुखी जीवन के लिए परम आवश्यक है मानसिक शांति तथा शारीरिक आरोग्यता। इन्हीं की प्राप्ति के लिए गुरबाणी में अत्यंत प्रमाण मौजूद हैं :

दूखु दरदु जमु नेड़ि न आवै ॥
कहु नानक जो हरि गुन गावै ॥ (पन्ना १३०२)

आजकल अक्सर कहा जाता है कि अब जमाना बदल गया है। लोग धर्म में रुचि नहीं लेते हैं। यहां तक कि कई लोग भगवान की हस्ती को भी नहीं मानते हैं। यह सत्य है कि जमाना चाहे कितना भी बदल जाये और सारी कदरें-कीमतें बदल जाएं किंतु कुदरत की यह अटल हकीकत कभी नहीं बदलेगी :

जेहा बीजै सो लुणै करमा संदड़ा खेतु ॥
(पन्ना १३४)

गुरबाणी में मानसिक शांति के लिए अत्यंत सुंदर ढंग से बिलकुल सरल मार्गदर्शन किया गया है :

जितु कीता पाईऐ आपणा
सा घाल बुरी किउ घालीऐ ॥
मंदा मूलि न कीचई दे लंमी नदरि निहालीऐ ॥
(पन्ना ४७४)

प्रसन्नतापूर्वक सुखी जीवन व्यतीत करने के लिए प्रेरणा दी गई है कि किसी के प्रति मन में किसी भी प्रकार की ईर्ष्या, दुर्भावना मत रखो :

पर का बुरा न राखहु चीत ॥
तुम कउ दुखु नही भाई मीत ॥ (पन्ना ३८६)

बिलकुल सरल, सादा, एवं सुगम धर्म-मार्ग दिखाया श्री गुरु नानक देव जी ने। इस मार्ग में किसी प्रकार की कोई कठिनाई नहीं है। यह धर्म-मार्ग सिक्ख धर्म के नाम से विख्यात हुआ। यह धर्म सब प्रकार के वहमों, पाखंडों, कर्मकांडों, आडंबरों और तमाम रस्मों-रिवाज़ों के बंधनों से मुक्त है। दुनिया की तमाम मुसीबतों और दुखों से छुटकारा पाने के लिए गुरबाणी में अनमोल वचन हैं :

--हरि हरि हरि आराधीऐ होईऐ आरोग ॥
(पन्ना ४४६)

--ए मन मेरिआ तू सदा रहु हरि नाले ॥
हरि नालि रहु तू मंन मेरे दूख सभि विसारणा ॥
(पन्ना ९१७)

--सिमरउ सिमरि सिमरि सुखु पावउ ॥
कलि कलेस तन माहि मिटावउ ॥ (पन्ना २६२)

नाम-सिमरन करते रहने से मनुष्य हर प्रकार के मानसिक एवं शारीरिक रोगों से मुक्त हो जाता है। भले ही कोई राजा-महाराजा क्यों न हो, नाम-सिमरन से ही मानसिक शांति मिला करती है :

प्रभ कउ सिमरहि सि बेमुहताजे ॥
प्रभ कउ सिमरहि सि सरब के राजे ॥
(पन्ना २६३)

इतना अवश्य है कि किसी वस्तु को पाने के लिए मनुष्य की इच्छा-शक्ति जितनी बलवान

**गणेश राम नगर, रायपुर।*

Final

होगी उतनी शीघ्रता से वह वस्तु उसे प्राप्त हो जायेगी। इस इच्छा-शक्ति को बल मिलता है सर्वशक्तिमान परमात्मा पर भरोसा करने से :

जो मागउ सोई सोई पावउ अपने खसम भरोसा ॥
(पन्ना ६१९)

जब मनुष्य प्रभु पर भरोसा कर लेता है फिर उसको दुख महसूस नहीं होता। वह दृढ़ निश्चय से गाता है :

जिस के सिर ऊपरि तूं सुआमी सो दुखु कैसा पावै ॥ *(पन्ना ७४९)*

जब मनुष्य सच्चे हृदय से प्रभु का बन जाता है तो उसे परम आनंद की प्राप्ति हो जाती है जिस कारण वह दुनिया भर की तमाम दौलत और पदार्थों के खज़ाने भी तुच्छ समझता है :

--जा तू मेरै वलि है ता किआ मुहछंदा ॥
तुधु सभु किछु मैनो सउपिआ जा तेरा बंदा ॥
(पन्ना १०९६)
—अवरि उपाव सभि तिआगिआ दारू नामु लइआ ॥
ताप पाप सभि मिटे रोग सीतल मनु भइआ ॥
(पन्ना ८१७)

क्योंकि उसे पूर्ण भरोसा है :

तिसु साहिब की टेक नानक मनै माहि ॥
जिसु सिमरत सुखु होइ सगले दूख जाहि ॥
(पन्ना ५१७)

संसार में कई लोग अत्यधिक धन-संपत्ति संग्रह करने को सुख समझते हैं तथा उसे एकत्रित करने के लिए कई प्रकार के धंधों में दिन-रात व्यस्त रहते हैं। गुरबाणी में फरमाया गया है :

सुखु नाही बहुतै धनि खाटे ॥ (पन्ना ११४७)

यह भी बिलकुल अटल सत्य है कि कितनी भी धन-दौलत एकत्र कर ली जाए मनुष्य की कभी भी तृप्ति नहीं हो सकती :

--सहस खटे लख कउ उठि धावै ॥
त्रिपति न आवै माइआ पाछै पावै ॥
अनिक भोग बिखिआ के करै ॥
नह त्रिपतावै खपि खपि मरै ॥ *(पन्ना २७८)*
--इसु जर कारणि घणी विगुती
इनि जर घणी खुआई ॥
पापा बाझहु होवै नाही मुइआ साथि न जाई ॥
(पन्ना ४१७)

शारीरिक रोग से भी बड़े मानसिक रोग होते हैं। प्रभु को मन से भुला देने से मनुष्य मानसिक रोगों से ग्रस्त हो जाता है। मानसिक रोगी की दशा शारीरिक रोगी से बदतर होती है :

खसमु विसारि कीए रस भोग ॥
तां तनि उठि खलोए रोग ॥
मन अंधे कउ मिलै सजाइ ॥
वैद न भोले दारू लाइ ॥ *(पन्ना १२५६)*

संसार में बहुत कुछ ऐसा भी होता है जो आम तौर पर पसंद न करते हुए मनुष्य व्याकुल हो उठता है। कई बार ऐसी घटनायें घटती हैं जो मनुष्य की इच्छा के विरुद्ध होने के कारण वह बहुत ही चिंतित होता है। प्रभु का भक्त इन सब व्याधियों के बावजूद धैर्य में रहता है। उसे पूर्ण विश्वास है कि इस संसार में जो कुछ भी हो रहा है प्रभु के अटल हुक्म के अनुसार ही हो रहा है। उसकी आज्ञा के बिना पत्ता भी नहीं हिल सकता। प्रभु-हुक्म में रहने वाला मनुष्य संतोषपूर्वक सिर झुकाकर कहता है :

जो तुधु भावै साई भली कार ॥ *(पन्ना ४)*

कभी-कभी किसी अत्यंत प्रिय मित्र या परिवार के किसी अजीज़ सदस्य की मृत्यु होने पर साधारणत: मनुष्य शोकाकुल हो गहरी चिंता में डूब जाता है। इसके लिए भी गुरबाणी में मार्गदर्शन किया गया है :

चिंता ता की कीजीऐ जो अनहोनी होइ ॥

Final

इहु मारगु संसार को नानक थिरु नही कोइ ॥
(पन्ना १४२९)

जो पैदा हुआ है उसे एक न एक दिन अवश्य मरना है। जीवन में शुभ कर्म करने चाहिए ताकि संसार में आना सफल हो जाए :

जो उपजिओ सो बिनसि है परो आजु कै कालि ॥
नानक हरि गुन गाइ ले छाडि सगल जंजाल ॥
(पन्ना १४२९)

इसी हकीकत का मनुष्य को पूर्ण ज्ञान हो जाये तो वह अपना मूल पहचान कर, अपना जीवन उद्देश्य जानकर प्रभु-गुण-गायन करता रहता है :

मन तूं जोति सरूपु है आपणा मूलु पछाणु ॥
मन हरि जी तेरै नालि है गुरमती रंगु माणु ॥
(पन्ना ४४१)

मन प्रभु के साथ जोड़ लें तो सदा आनंद ही आनंद बना रहता है। फिर जीवन-मनोरथ पूरा हो जाता है; सारे दुख दूर हो जाते हैं :

अनदु सुणहु वडभागीहो सगल मनोरथ पूरे ॥
पारब्रहमु प्रभु पाइआ उतरे सगल विसूरे ॥
(पन्ना ९२२)

Final

कविता

प्रार्थना

*-प्रो. शाम लाल कौशल**

हे परमात्मा ऐसा कुछ कर दे!
सबके मन में हिम्मत भर दे!
सबकी वाणी में अमृत भर दे!
सुख-शांति की वर्षा कर दे!
प्रेम सदा ही बढ़ता जाए,
पापियों के दिल में कुछ डर भर दे!
अंधेरे हों दूर मन के हमारे,
ज़िंदगी हमारी रोशन कर दे!
न हो दुश्मनी किसी की किसी से,
सबकी बुद्धि निर्मल कर दे!
सभी हों एक-दूसरे के हितकारी,
भगवन कर्म हमारे ऐसे कर दे!
खुशियां हों घर-घर में हमेशा,
हर दिन को 'दीवाली' कर दे!

**मकान नं: ९७५-बी/२०, शक्ति नगर, ग्रीन रोड, रोहतक-१२४००१ (हरियाणा) फोन : ९४१६३५९०४५*

अद्भुत शहीदी की रौशन मशाल-- बाबा दीप सिंह जी

-डॉ सत्येंद्र पाल सिंघ*

बाबा दीप सिंह जी उन गिने-चुने भाग्यशाली सिक्ख नायकों में से एक हैं, जिन्हें अपने जीवन में गुरु, गुरु-शबद तथा गुरु-घर की सेवा का दुर्लभ अवसर मिला और इस अवसर को उन्होंने इतने समर्पण, भावना एवं प्रतिबद्धता से सिद्ध किया कि विस्मित करने वाला इतिहास रच दिया। ऐसी कोई दूसरी मिसाल इतिहास में नहीं मिलती। श्री गुरु नानक साहिब ने जब धर्म की राह पर चलने के लिए लोगों को आमंत्रित व प्रेरित किया तब एक मर्यादा बना दी कि इसके लिए सिर देने से भी संकोच नहीं करना होगा और सिर तली पर रख कर आना होगा-- *"सिरु दीजै काणि न कीजै ॥"* इसका निहित भाव था कि धर्म के मार्ग पर चलने के लिए पूर्ण समर्पण की आवश्यकता होती है। बड़ी संख्या में लोगों ने इस भावना को ग्रहण किया और सिक्ख बने। सन् १६९९ की वैसाखी के दिन जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने खालसा पंथ की साजना की थी उस दिन श्री अनंदपुर साहिब में अस्सी हज़ार से अधिक सिक्ख उपस्थित थे, जिन्होंने अपने समर्पण को प्रकट करते हुए अमृत-पान किया था। बाद के कुछ ही महीनों में यह संख्या लाखों तक पहुंच गई थी। जब भी आवश्यकता हुई, सिक्ख बलिदान देने से पीछे नहीं हटे हैं। श्री गुरु नानक साहिब के वचन-- *"सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥"* को शब्दश: चरितार्थ करने वाले अकेले नायक बाबा दीप सिंघ जी ही हुए हैं। वे जन्म के बाद से ही गुरु के हो गए थे और अंत तक गुरु के लिए रहे। गुरु के लिए जीवन जीना क्या होता है, यह भेद हर कोई नहीं, लाखों-करोड़ों में कोई एक जान पाता है :

नेड़ै नेड़ै सभु को कहै ॥
गुरमुखि भेदु विरला को लहै ॥ *(पन्ना ११३९)*

बाबा दीप सिंघ जी ने गुरु के लिए जीवन जीने का अर्थ भली-भांति समझ लिया था। उनका जन्म २६ जनवरी, सन् १६८२ को श्री अमृतसर के गांव पहुविंड में हुआ था। वे अपने पिता भाई भगता जी व माता जीऊणी जी की इकलौती संतान थे। उनका लालन-पालन बड़े ही प्रेम-दुलार से हो रहा था। जब वे बारह वर्ष के थे, अपने माता-पिता के साथ श्री अनंदपुर साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दर्शन के लिए गए। उनके परिवार ने कई दिन श्री अनंदपुर साहिब में रह कर गुरु साहिब के उपदेश ग्रहण किए और सेवा की। जब वे लौटने लगे तो गुरु साहिब ने बाबा दीप सिंघ जी से उनके पास ही रुक जाने को कहा। वे सहर्ष गुरु साहिब के पास श्री अनंदपुर साहिब रुक गए। गुरु साहिब ने उनकी शिक्षा-दीक्षा के श्रेष्ठ प्रबंध किये। वाहिगुरु की महिमा अनंत और अकथ्य है। वह जिस पर कृपा करता है अपने सारे भंडार खोल देता है और उसे निहाल, निहाल कर देता है :

चोजी मेरे गोविंदा चोजी मेरे पिआरिआ

*ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, फोन: ९४१५९-६०५३३

Final

हरि प्रभु मेरा चोजी जीउ ॥
हरि आपे कानु उपाइदा मेरे गोविंदा
हरि आपे गोपी खोजी जीउ ॥ (पन्ना १७४)

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने कुछ ऐसा ही कौतुक रचा। उन्होंने बारह वर्ष के बाबा दीप सिंघ जी को जब श्री अनंदपुर साहिब रुक जाने को कहा तो वे रुकने को तैयार हो गए। गुरु साहिब के निर्देश पर भाई मनी सिंघ जी व अन्य सिक्ख विद्वानों ने बाबा दीप सिंघ जी को गुरबाणी, धर्म-दर्शन, पंजाबी व अन्य भाषाओं की शिक्षा दी। उन्होंने घुड़सवारी और अस्त्र-शस्त्र एवं युद्ध-कला भी सीखी। इस तरह जहां वे धर्म-दर्शन के अच्छे विद्वान के रूप में उभर रहे थे वहीं श्रेष्ठ योद्धा के रूप में भी तैयार हो रहे थे। सन् १६९९ में जब खालसा पंथ की साजना हुई वे भी अमृत-पान कर सिंघ सज गए। इस समय वे लगभग अठारह वर्ष के हो चुके थे। बाबा दीप सिंघ जी सन् १७०२ तक श्री अनंदपुर साहिब रहे। वे सुडौल शरीर, मज़बूत इरादों के स्वामी थे और गुरबाणी तथा नाम-सिमरन में रमे रहते थे। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के साथ आगे होकर उन्होंने युद्धों में भाग लिया। सन् १७०२ में गुरु साहिब के आदेश पर वे अपने वृद्ध माता-पिता की देखभाल के लिए घर पहुविंड वापिस आ गए। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जब आठ वर्षीय बाबा दीप सिंघ जी को अपने पास रोक लिया था तो वे जानते थे कि उन्हें भविष्य के लिए एक आदर्श और वीर सिक्ख नायक चाहिए था। जब उन्हें उचित अवसर लगा कि भाई भगता जी और माता जीऊणी जी को देखभाल के लिए अपने सुपुत्र की आवश्यकता है, गुरु साहिब ने बाबा दीप सिंघ जी को घर भेजकर उनकी आवश्यकता भी पूरी की :

करन करावन हरि अंतरजामी
जन अपुने की राखै ॥
जै जैकारु होतु जग भीतरि सबदु गुरु रस चाखै ॥
(पन्ना ६३०)

जो वाहिगुरु की शरण में आ जाता है और उसकी आज्ञा में रहना सीख जाता है, वाहिगुरु उस पर दया कर पल-पल उसका सहायक बन जाता है। इससे उसका जीवन धन्य हो जाता है। बाबा दीप सिंघ जी और उनके परिवार को भी यही सौभाग्य प्राप्त हुआ। बाबा दीप सिंघ जी पहुविंड में रहने लगे और अपने माता-पिता की सेवा करने लगे। यहां भी उनका मन गुरु-शबद में रमा रहा तथा गुरु की प्रीति का रंग और गूढ़ा होता गया। इसी वर्ष उनका विवाह भी हो गया। सन् १७०४ में श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने औरंगज़ेब की कुरान की कसम पर श्री अनंदपुर साहिब छोड़ दिया, किंतु मुगलों के विश्वासघात के कारण सिक्खों को भारी क्षति उठानी पड़ी। गुरु साहिब का परिवार बिखर गया और चार साहिबज़ादों तथा बड़ी संख्या में सिक्खों की शहीदी हुई। वह संचार-साधनों का युग नहीं था। समाचार के लिए लोग संदेश-वाहकों पर ही आश्रित रहा करते थे और इसमें विलंब होना स्वाभाविक था। बाबा दीप सिंघ जी को जैसे ही श्री अनंदपुर साहिब के हालात और पावन बलिदानों के बारे में पता चला, वे गुरु साहिब से मिलने निकल पड़े। गुरु साहिब से उनकी भेंट उस स्थान पर हुई जिसे अब तख़्त श्री दमदमा साहिब नाम से जाना जाता है। उस समय तक गुरु साहिब ने युद्धों से उभर कर अपना पूरा ध्यान सिक्ख पंथ को पुन: संयोजित करने और गुरबाणी के

Final

प्रसार पर लगा दिया था। महत्त्वपूर्ण ग्रंथों के सरसा नदी के बहाव में बह जाने के कारण बहुत हानि हुई थी। श्री गुरु ग्रंथ साहिब के स्वरूप के बिना कार्य आगे नहीं बढ़ सकता था। गुरु साहिब ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़ तैयार करने के लिए भाई मनी सिंघ जी के साथ-साथ बाबा दीप सिंघ जी की सेवायें भी लीं। बाबा दीप सिंघ जी ने बाद में अपनी हस्तलिपि में श्री गुरु ग्रंथ साहिब के चार स्वरूप तैयार किए। उन्होंने अरबी लिपि में भी श्री गुरु ग्रंथ साहिब का स्वरूप तैयार किया। यह सिक्ख कौम को उनकी बहुत बड़ी सेवा थी। जब बाबा दीप सिंघ जी का स्मरण किया जाता है तो श्री हरिमंदर साहिब की मर्यादा को बचाने वाले वीर नायक के रूप में तथा उनकी गुरु और गुरु-शबद की सेवा को भी उतनी ही भावना से याद करना चाहिए, ताकि सच्चे और पूर्ण गुरसिक्ख की मूरत हमारे मन में बस कर हमें सदा प्रेरित कर सके। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी दक्षिण की ओर जाने से पूर्व बाबा दीप सिंघ जी को वहां गुरबाणी के प्रचार-प्रसार की सेवा सौंप गए। बाबा जी दमदमा साहिब में रह कर ही संगत को गुरबाणी के अर्थ समझाने लगे और पंजाबी भाषा सिखाने लगे। वे लंबे समय तक दमदमा साहिब रह कर शबद-सेवा करते रहे। वे सिक्खों की हर तरह से सहायता को सदा तत्पर रहते। इससे सिक्खों में नये सिरे से विश्वास पैदा हुआ :

गुरमुखि अकथु कथै बीचारि ॥
गुरमुखि निबहै सपरवारि ॥ (पन्ना ९४१)

गुरबाणी को अंतर में धारण करना गुरसिक्ख का धर्म है। गुरु-शबद को विचार कर उसे अपने जीवन का अंग बनाने से ही जीवन सफल होता है। इससे पूरे समाज का भी हित होता है। बाबा जी का जीवन इसी ध्येय को समर्पित हो गया था।

परिस्थितियां बदलने के बाद जब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के आदेश पर बाबा बंदा सिंघ बहादुर नांदेड़ से चल कर पंजाब आए तो बाबा दीप सिंघ जी अपने साथियों के साथ उनके मददगार हो गए। बाबा दीप सिंघ जी के साथ पूर्ण समर्पित सिक्खों का ऐसा समूह था जो सदैव गुरु और गुरु-पंथ के लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर देने को तैयार रहता था, इसी लिए इन्हें शहीदों की मिसल कहा जाता था। गुरु-शबद की सेवा के बाद अब जब गुरु-शबद की मर्यादा के लिए तेग की सेवा का समय आया तो बाबा दीप सिंघ जी उसमें भी सबसे आगे थे। आपने कई युद्धों में हिस्सा लिया और सिआलकोट तक विजय प्राप्त की। बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शहीदी के बाद बाबा दीप सिंघ जी पुन: दमदमा साहिब आ गए और गुरबाणी के प्रसार के कार्य में लग गए। वे शहीदी मिसल के जत्थेदार के रूप में भी अपने क्षेत्र के लोगों की रक्षा और सेवा का दायित्व निभाते रहे।

सन् १७५६ में अहमद शाह अब्दाली ने भारत पर आक्रमण किया और लूटमार करता हुआ दिल्ली तक पहुंच गया। जब वह लूटमार और तबाही कर वापिस लौट रहा था तो सिक्खों ने दिल्ली से ही उसका पीछा करना आरंभ कर दिया। वह अपने साथ बेशुमार सोना, चांदी, जेवरात तथा बड़ी संख्या में स्त्रियों और बच्चों को भी कैद कर ले जा रहा था। सिक्खों ने इसके विरोध का फैसला किया। सिक्ख मिसलों ने उसके काफिले पर हमले किए। जब अब्दाली का काफिला कुरुक्षेत्र

Final

पहुंचा तो बाबा दीप सिंघ जी के नेतृत्व में सिक्खों ने उस पर जबरदस्त हमला किया और अपनी जान की बाज़ी लगा कर बंदी बनाई गई स्त्रियों एवं बच्चों को मुक्त करा लिया। कहते हैं कि लगभग तीन सौ भारतीय स्त्रियों और सौ बच्चों को मुक्त कराया गया। इन स्त्रियों, बच्चों को न केवल मुक्त कराया गया बल्कि उन्हें सुरक्षित उनके घर तक पहुंचाया भी गया। यह भारतीय इतिहास की स्वर्णिम अक्षरों में लिखी जाने वाली घटना है जो सदैव याद रखी जानी चाहिए और पूरे देश को सिक्खों का आभारी होना चाहिए। भारत में बड़े-बड़े योद्धा और महाबली थे, किंतु अहमद शाह अब्दाली की नृशंसता के आगे सभी दब, सहम गए थे। सिक्खों ने अति विषम परिस्थितियों में वह कर दिखाया जो भारतीय बहुसंख्या लोगों द्वारा स्वप्न में भी नहीं सोचा जा सकता था। सिक्खों ने वीरता के साथ-साथ उच्च चरित्र का भी परिचय दिया। यह बात भिन्न है कि जून, १९८४ और नवंबर, १९८४ ई में गुरु साहिबान के उपकारों, बलिदानों के साथ ही सिक्खों के इस महान उपकार को भी ताक पर रख दिया गया था।

अहमद शाह अब्दाली सिक्खों से मुंह की खाकर लौट गया, किंतु उसके मन में प्रतिशोध की अग्नि जल गई। लाहौर का राज-काज अब्दाली के पुत्र तैमूर खान और जहान खान के हाथ आ गया था। उन्होंने सिक्खों से बदला लेने के लिए मई, सन् १७५७ में श्री अमृतसर पर हमला कर दिया। पवित्र इमारतें ढहा दी गईं और अमृत सरोवर को मिट्टी से भर दिया गया। इससे सिक्खों में भारी रोष फैल गया। बाबा दीप सिंघ जी, जो उस समय ७५ वर्ष के हो चुके थे, भारी आक्रोश से भर उठे और तुरंत अपने साथियों के साथ श्री अमृतसर की ओर रवाना हो गए। तरनतारन तक पहुंचते-पहुंचते उनके साथ पांच हज़ार सिक्ख योद्धा हो गये। बाबा दीप सिंघ जी किसी भी कीमत पर गुरु की पावन नगरी श्री अमृतसर की बर्बादी और श्री हरिमंदर साहिब की भंग हुई मर्यादा का दंड अपराधियों को देना चाहते थे। वे इतिहास को बदल कर इस पुण्य स्थान की महिमा को शीघ्र-अति-शीघ्र बहाल करने के लिए संकल्पबद्ध हो दमदमा साहिब से निकले थे। गुरु साहिबान की शिक्षाओं के अनुसार परमात्मा की शरण में रह कर श्रेष्ठ जीवन-गुणों को धारण करना है :

मनु सबदि मरै परतीति होइ हऊमै तजे विकार ॥
(पन्ना १६२)

मन में परमात्मा के लिए श्रद्धा, भावना तथा प्रेम हो और जीवन काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकारों से मुक्त होना चाहिए। ऐसा मन सच को समर्पित हो जाता है-- *"मै मनि चाउ घणा साचि विगासी राम ॥"* इस अवस्था में ही उसे जीवन का सारा आनंद अनुभव होने लगता है। वह इस अवस्था को भंग होते हुए नहीं देख सकता। गुरु का शबद उसके लिए जिरहबख़्तर जैसा हो जाता है, जिससे वह निर्भय हो जाता है :

सतिगुरु का खड़गु संजोउ हरि भगति है
जितु कालु कंटकु मारि विडारिआ ॥ (पन्ना ३१२)

बाबा दीप सिंघ जी गुरबाणी के गूढ़ ज्ञाता और विद्वान थे, इसीलिए उनका गुरु-शबद का जिरहबख़्तर अधिक मज़बूत था और उनके अंदर अथाह हौसला भरा हुआ था। वे अपना खास खंडा लेकर वैरी को सबक सिखाने निकले थे जिसका वजन पंद्रह

Final

सेर था और इसे उठाने में अच्छे-अच्छों के पसीने छूट जाते थे। अफगानी जरनैल जहान खान को जब सूचना मिली कि सिक्ख हमला करने के लिए आ रहे हैं, उसने श्री अमृतसर से पहले ही गांव गोहलवढ़ में उनका रास्ता रोक लिया। बाबा जी के नेतृत्व में सिक्खों ने यहां भारी वीरता का प्रदर्शन किया और घोर युद्ध में अफगानियों के छक्के छुड़ा दिए। अफगानी सैनिक मैदान छोड़ कर भाग निकले। इतने में जहान खान का सहयोगी अताई खान फौज लेकर आ गया। इससे युद्ध पलट गया और सिक्ख तेजी से शहीद होने लगे। यहां युद्ध करते हुए बाबा दीप सिंघ जी की गर्दन पर ज़बरदस्त वार हुआ। वे इससे तनिक भी नहीं घबराए और अपने शीश को एक हाथ से संभालते और दूसरे हाथ से खड़ग के ज़बरदस्त प्रहार करते हुए श्री हरिमंदर साहिब की परिक्रमा तक आ गए। मान्यता यह है कि बाबा जी का शीश धड़ से अलग हो गया था, जिसे अपनी तली पर रख कर वैरी को पछाड़ते हुए वे श्री हरिमंदर साहिब तक पहुंचे थे।

सार यह कि जैसी अदम्य वीरता और साहस उन्होंने दिखाया वैसा उदाहरण इतिहास में अलभ्य है। उनका यह साहस किसी राज-पाट, पद, कुल के लिए नहीं, धर्म की मर्यादा को बचाने के लिए था। यदि हम गुरु-शबद के सच को धारण करने वाले हैं तो हमें गुरु-शबद का वह जिरहबख़्तर भी दिखना चाहिए जो बाबा दीप सिंघ जी के तन पर सुशोभित था, जो सारे कालकंटक मार देने अर्थात् हर संकट दूर कर देने में समर्थ है। सिर तली पर रख कर युद्ध करना तो सामान्य बात हो जाती है। ऐसे कौतुक सिक्खों ने बहुत किए हैं। दस लाख की फौज से चालीस सिक्खों का युद्ध करना तो आम आदमी की सोच से भी परे है, किंतु चमकौर साहिब के युद्ध में ऐसा ही हुआ। बाबा जी और उनके बहादुर साथियों ने श्री हरिमंदर साहिब की परिक्रमा में शहीदी प्राप्त की। सिक्खों ने अफगानियों को खदेड़ कर विजय प्राप्त की। इस तरह श्री हरिमंदर साहिब की पवित्रता बहाल हुई। श्री हरिमंदर साहिब की परिक्रमा में जहां बाबा जी की शहीदी हुई, गुरुद्वारा साहिब बना हुआ है। चाटीविंड (आजकल चाटीविंड गेट चौंक के नज़दीक) में उनका अंतिम संस्कार किया गया। वहां भी भव्य गुरुद्वारा साहिब बनाया गया है।

बाबा दीप सिंघ जी उन लोगों के लिए खोज और प्रेरणा के महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं जो सिक्ख होने का सच्चा अर्थ जानना चाहते हैं। कोई सिक्ख गुरु का कैसे हो सकता है और गुरु के लिए कैसे पूरा जीवन लगा सकता है, यह बाबा जी के जीवन को समझने से ही जाना जा सकता है। उन्होंने बातों से नहीं, अपनी भावना, गुणों और कर्मों से जीवन भर सेवा कर गुरु की कृपा प्राप्त की थी-- *"रैनि दिनसु प्रभ सेव कमानी ॥ हरि मिलणै की एह नीसानी ॥"*

Final

श्री मुक्तसर साहिब के ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान

*-डॉ कशमीर सिंघ 'नूर'**

ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान के दर्शन-दीदार करने के विशेषत: दो विशेष लाभ होते हैं। एक तो गुरु-घर की आशीषें व खुशियां प्राप्त होती हैं और दूसरा लाभ सिक्ख इतिहास के रू-ब-रू होकर इसके बारे में अमूल्य व महत्त्वपूर्ण जानकारी मिलती है। हम सबको ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान की यात्रा करनी चाहिए और अपने बच्चों को भी अपने साथ ले जाना चाहिए, ताकि वे भी सिक्खी तथा सिक्ख इतिहास की गौरवशाली विरासत एवं धरोहर से परिचित हो सकें। इस आलेख में हम सिक्ख इतिहास के ऐतिहासिक नगर श्री मुक्तसर साहिब में स्थित प्रसिद्ध गुरुद्वारा साहिबान के संबंध में जानकारी सांझा करेंगे।

श्री मुक्तसर साहिब का पुरातन नाम 'खिदराणे की ढाब' था। ढाब का अर्थ 'जलकुंड' होता है। यहां पर प्रत्येक वर्ष प्रथम माघ को बहुत भारी जोड़ मेला आयोजित होता है। इस जोड़ मेले में लाखों की संख्या में देश-विदेश से संगत अपनी अकीदत पेश करने हेतु आती है। यह जोड़ मेला सरवंशदानी, खालसा पंथ के बानी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी और चालीस मुक्तों (शहीदों) से संबंधित है। यहां पर दशमेश पिता तथा चालीस मुक्तों की याद में कुल आठ गुरुद्वारा साहिबान सुशोभित हैं। बहुत-सी सिक्ख संगत को सभी गुरुद्वारा साहिबान के बारे में जानकारी नहीं है। गुरुद्वारा टुट्टी गंढी साहिब परिसर में सुशोभित गुरुद्वारा साहिबान के अलावा वहां से लगभग ढाई किलोमीटर दूर गुरुद्वारा टिब्बी साहिब है, जहां दो अन्य गुरुद्वारा साहिबान भी सुशोभित हैं। 'टिब्बी' या 'टिब्बा' का अर्थ रेत का टीला होता है। गुरुद्वारा टुट्टी गंढी साहिब परिसर में सुशोभित गुरुद्वारों का वर्णन इस प्रकार है :-

गुरुद्वारा टुट्टी गंढी साहिब : इस स्थान पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने भाई महां सिंघ की विनती पर बेदावा फाड़ा था। यह बेदावा श्री अनंदपुर साहिब में गुरु जी से बेमुख हुए सिंघों ने उन्हें लिखकर दिया था कि आप हमारे गुरु नहीं और हम आपके सिक्ख नहीं। इस प्रसिद्ध ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिब का काफी हिस्सा जून, १९८४ ई में आपरेशन ब्लू स्टार के समय क्षतिग्रस्त हो गया था। पुन: इसका निर्माण किया गया। यहां विशाल सरोवर भी है। सरोवर के चारों तरफ परिक्रमा में शानदार बरामदा बना हुआ है। इसके साथ सटी हुई सराय, लंगर हाल तथा भाई महां सिंघ दीवान हाल की भव्य इमारत बनी हुई है।

गुरुद्वारा तंबू साहिब : यह गुरुद्वारा साहिब श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की अद्भुत व सफल युद्ध-नीति से संबंधित इतिहास को दर्शाता है। यहां हुए युद्ध के दौरान दशमेश पिता की फौज ने इस स्थान पर करीर, बबूल, बेरी, आदि वृक्षों पर अपनी चादरें तथा अन्य वस्त्र फैलाकर फौजी तंबू लगे होने का भ्रम पैदा किया था। इस युद्ध-नीति के कारण दुश्मनों को लगा था

**बी-एक्स ९२५, मोहल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फोन : ९८७२२-५४९९०*

Final

कि खालसा फौज बड़ी संख्या में मौजूद है, जबकि उस समय गुरु जी के साथ बहुत कम सिंघ थे। गुरु जी ने दुश्मनों के हौसले पस्त करने हेतु इस युद्ध-नीति को अपनाया था।

गुरुद्वारा शहीदगंज साहिब : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जंग में शहादत प्राप्त करने वाले सिंघों का जिस स्थान पर अपने हाथों से अंतिम संस्कार किया था, उस स्थान पर गुरुद्वारा शहीदगंज साहिब सुशोभित है। वर्णनीय है कि खिदराणे की ढाब पर गर्मी के मौसम में युद्ध लड़ा गया था, किंतु इस ऐतिहासिक युद्ध से संबंधित उत्सव माघ के महीने में मनाया जाता है, क्योंकि पुरातन समय में जल की कमी और रेतीला इलाका होने के कारण यात्रियों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। अब तो बहुत प्रगति हो चुकी है।

गुरुद्वारा माई भागो जी : सिक्ख इतिहास में माई भागो जी को बहुत सम्मान प्राप्त है। उनका ज़िक्र सिक्ख पंथ की सिरमौर शख़्सियतों में किया जाता है। माई भागो जी की प्रेरणा व आगवानी की वजह से ही गुरु जी का साथ छोड़ आए सिंघों ने अपनी भूल को सुधारते हुए इस स्थान पर हुए युद्ध में दुश्मनों को नाकों चने चबवाए थे। वे वीरगति को प्राप्त हुए थे। माई भागो जी की स्मृति में गुरुद्वारा माई भागो जी गुरुद्वारा तंबू साहिब के बिलकुल निकट सुशोभित है।

ऐतिहासिक सिक्ख अजायब घर : यहां पर सिक्ख इतिहास से संबंधित चित्र रखे हुए हैं। यह अजायब घर (संग्रहालय) गुरुद्वारा टुट्टी गंढी साहिब और गुरुद्वारा शहीदगंज साहिब के निकट स्थित है। इसके साथ ही प्रबंधकीय अमले का कार्यालय भी मौजूद है।

लंगर और सराय : नाका (गेट) नंबर तीन के पास ही एक बहुत बड़ी सराय है। लंगर की भव्य इमारत भी है, जहां पर हर समय संगत को छकने हेतु लंगर मिलता है।

गुरुद्वारा टिब्बी साहिब के अलावा यहां निम्नलिखित गुरुद्वारा साहिबान सुशोभित हैं :-

गुरुद्वारा टिब्बी साहिब : एक अलग ही रणनीति के तहत श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने एक ऊंची टिब्बी (टीले) पर लड़ाई का मोर्चा लगाया हुआ था। यहां पर वे अपनी सेना का नेतृत्व भी कर रहे थे और साथ ही अपने तीरों की वर्षा द्वारा दुश्मनों के छक्के भी छुड़ा रहे थे। यह गुरुद्वारा श्री मुकतसर साहिब नगर की पश्चिम दिशा में सुशोभित है। यह भी सिक्ख इतिहास की अमूल्य धरोहर व निधि है।

गुरुद्वारा रकाबसर साहिब : इस स्थान पर श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के घोड़े 'जान भाई' की रकाब गिरी थी। वह रकाब संगत के दर्शन हेतु अब भी यहां पर सहेज कर रखी हुई है।

गुरुद्वारा दातणसर साहिब : श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा स्थापित रहित मर्यादा के अलावा सिक्ख नियमावली में शरीर की नित्यप्रति व नियमबद्ध सफाई भी शामिल है। गुरु जी ने लड़ाइयों के कठिन समय में भी नित्यक्रम नहीं छोड़ा था। अपने नित्तनेम के अनुसार वे प्रात: काल उठकर दातुन-कुल्ला करते थे। इसी संदर्भ में यहां पर गुरुद्वारा दातणसर साहिब सुशोभित है।

गुरुद्वारा तरनतारन (दूख निवारण) साहिब : यह गुरुद्वारा श्री मुकतसर साहिब में बठिंडा रोड पर सुशोभित है। ऐतिहासिक जानकारी के अनुसार श्री मुकतसर साहिब से रुपाणा की तरफ जाते समय गुरु जी यहां पर कुछ देर के लिए ठहरे थे। प्रत्येक रविवार को यहां पर भारी मात्रा में संगत एकत्र होती है तथा दर्शन-स्नान कर निहाल होती है।

Final

असहयोग की अद्भुत मिसाल : चाबियों का मोर्चा

*–डॉ राजेंद्र सिंघ साहिल**

बीसवीं शताब्दी का तीसरा दशक सिक्ख समाज के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण समय था। यह वह दौर था जब पंजाब सहित सारे भारत में गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर चली। श्री अकाल तख़्त साहिब में १५ नवंबर, १९२० ई को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की स्थापना की गई। एक महीने बाद ही शिरोमणि अकाली दल का गठन हुआ। इनके नेतृत्व में सिक्ख समाज ने समस्त गुरुद्वारा साहिबान को महंतों के कुप्रबंध से मुक्त कराने के लिए विराट जन-आंदोलन आरंभ किया जो एक नवंबर १९२५ को 'गुरुद्वारा एक्ट' लागू होने के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

समस्या की पृष्ठभूमि : दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी एवं बाबा बंदा सिंघ बहादुर के पश्चात सन् १७२० से लेकर १७८० ई तक का समय सिक्खों के लिए ज़बरदस्त संघर्ष का समय था। सिक्ख जंगलों में रहकर छापामार युद्ध जारी रखे हुए थे। ऐसे में गुरुधामों का प्रबंध उदासी संप्रदाय के महंतों के हाथ में दे दिया गया। महंतों ने लंबे समय तक सिक्खों की अनुपस्थिति में गुरुद्वारा साहिबान की सेवा-संभाल की।

महाराजा रणजीत सिंघ के काल में भी यही व्यवस्था लागू रही। महाराजा के दौर में गुरुधामों की इमारतों और संपत्तियों का बड़े पैमाने पर निर्माण हुआ। जब गुरुद्वारा साहिबान में धन एवं संपत्ति की अधिकता हुई तो महंत पथ-भ्रष्ट होते चले गए।

१८४९ ई में अंग्रेज़ों के पंजाब पर अधिकार के बाद अंग्रेज़ों ने महंतों को अपनी ओर मिलाकर गुरुद्वारा साहिबान पर नियंत्रण करने के प्रयास शुरू कर दिए। महंतों ने भी गुरुधामों की अथाह संपत्ति को हथियाने के उद्देश्य से अंग्रेज़ों की कठपुतली बनना स्वीकार कर लिया।

ऐसे विपरीत माहौल में गुरुद्वारा साहिबान में गुरु-मर्यादा भंग हो गई और वे महंतों के भोग-विलास के अड्डे बन गए।

सिक्ख समाज इस कुप्रबंध और विलासिता से अत्यंत व्यथित था, इसलिए गुरुद्वारा साहिबान को मुक्त कराने और मर्यादा को पुन: स्थापित करने हेतु एक बड़ा जन-आंदोलन छेड़ने का निश्चय किया गया।

विभिन्न मोर्चे : सन् १९२१ से लेकर १९२५ ई तक गुरुद्वारा प्रबंध सुधार लहर के अंतर्गत शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी तथा शिरोमणि अकाली दल के नेतृत्व में अनेक मोर्चे लगाए गए और प्रत्येक मोर्चे में असहयोग एवं सत्याग्रह के मार्ग पर चलते हुए सिक्ख संगत ने अद्भुत सफलता प्राप्त की।

बाबे दी बेर दा मोर्चा, मोर्चा गुरुद्वारा श्री पंजा साहिब, मोर्चा गुरुद्वारा श्री ननकाणा साहिब, मोर्चा गुरुद्वारा गुरु का बाग, जैतो का मोर्चा आदि इस आंदोलन के प्रमुख मोर्चे हैं। इन्हीं मोर्चों में से एक प्रमुख एवं महत्त्वपूर्ण मोर्चा है— चाबियों का मोर्चा।

पहला असहयोग आंदोलन—चाबियों का मोर्चा : अंग्रेज सरकार से श्री हरिमंदर साहिब, श्री अमृतसर से संबंधित तोशाखाना आदि की चाबियां लेने के लिए जो संघर्ष किया गया वह सिक्ख इतिहास में चाबियों का मोर्चा कहलाता है। यह मोर्चा १९ अक्तूबर, १९२१ ई से लेकर १० जनवरी, १९२२ ई तक चला।

अंग्रेज सरकार ने २० अप्रैल, १९२१ ई को श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर का प्रबंध सिक्खों के हवाले कर दिया था, परंतु यहां की चाबियां अभी सिक्ख समाज को नहीं मिली थीं। चाबियां अभी स. सुंदर सिंघ रामगढ़िया के पास थीं, जिन्हें अंग्रेज़ों ने

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फ़ोन : ९४१७२-७६२७१*

Final

श्री दरबार साहिब का सरबराह (प्रबंधक) नियुक्त किया हुआ था।

अक्तूबर, १९२१ ई में स. सुंदर सिंह मजीठा के बाद बाबा खड़क सिंह शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के प्रधान चुने गए। बाबा जी के नेतृत्व में १९ अक्तूबर, १९२१ ई को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की एक बैठक हुई, जिसमें अंग्रेज़ सरकार से श्री दरबार साहिब की चाबियों की मांग की गई। इस बैठक में स. सुंदर सिंह रामगढ़िया भी शामिल थे।

अंग्रेज़ सरकार ने शिरोमणि गु. प्र. कमेटी को सिक्खों का प्रतिनिधि न मानते हुए चाबियां देने से इनकार कर दिया। यही नहीं, सरकार ने ६ नवंबर, १९२१ ई को स. सुंदर सिंह रामगढ़िया से चाबियां लेकर अपने कब्ज़े में कर लीं और उनकी जगह एक नया सरबराह नियुक्त कर दिया गया।

सिक्ख समाज ने नए नियुक्त सरबराह कैप्टन बहादर सिंह को मानने से इंकार कर दिया। १२ नवंबर को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने फैसला किया कि नए सरबराह को गुरुद्वारा प्रबंध में दखल न देने दिया जाए।

इससे एक दिन पहले ११ नवंबर को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने सरकार के विरुद्ध असहयोग करने का प्रस्ताव पारित किया तथा यह निर्णय लिया गया कि श्री अमृतसर आ रहे प्रिंस ऑफ वेल्स का बायकाट किया जाए और पूरे नगर में हड़ताल रखी जाए।

१५ नवंबर को श्री गुरु नानक देव जी के प्रकाश पर्व पर अंग्रेजों द्वारा नियुक्त नया सरबराह कैप्टन बहादर सिंह श्री अमृतसर आया, परंतु भारी विरोध के कारण उसे वापिस लौटना पड़ा।

इधर अंग्रेज़ सरकार ने अपनी स्थिति स्पष्ट करने के उद्देश्य से अजनाला शहर में २६ नवंबर को एक जलसे के आयोजन की घोषणा कर डाली। शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने भी जवाब में उसी दिन अजनाला में अपने जलसे की घोषणा कर दी। अंग्रेज़ सरकार ने २४ नवंबर को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के जलसे पर पाबंदी लगा दी।

२६ नवंबर को अजनाला में सरकार ने अपना जलसा तो किया मगर शिरोमणि गु. प्र. कमेटी का जलसा न होने दिया। जब अकालियों ने जलसा करना चाहा तो स. दान सिंह, स. जसवंत सिंह झबाल, स. तेजा सिंह समुंदरी, बाबा खड़क सिंह, स. महिताब सिंह आदि नेताओं समेत अनेक अकालियों को गिरफ्तार कर लिया गया।

इन गिरफ्तारियों से संघर्ष में एक दम और तेज़ी आ गई। गुरु का बाग और श्री अकाल तख़्त साहिब पर रोज़ दीवान लगने लगे। साथ ही गिरफ़्तारियां भी दी जाने लगीं। अजनाला में गिरफ्तार किए गए सिक्ख नेताओं पर मुकद्दमा चला और उन्हें ६-६ महीने की कैद दे दी गई।

जल्द ही कांग्रेस और खिलाफत कमेटी ने भी इस मोर्चे का समर्थन कर दिया। अनेक अकाली श्री अकाल तख़्त साहिब पर हाज़िर होने लगे और खुद को गिरफ्तारियों के लिए पेश करने लगे। एक जनवरी, १९२२ ई को बेदी, सोढी और भल्ला भाईचारे ने भी अपनी कांफ्रेंस के माध्यम से मोर्चे का समर्थन कर दिया और अंग्रेज सरकार के विरुद्ध संघर्ष करने का प्रस्ताव पारित कर दिया।

इसी दौरान खालसा कॉलेज श्री अमृतसर के अध्यापकों ने भी सरकार के विरुद्ध प्रस्ताव पारित कर दिए।

जनमत विरुद्ध होते देख अंग्रेज़ सरकार ने ५ जनवरी, १९२२ ई को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के प्रकाशोत्सव पर चाबियां सिक्ख समाज को देनी चाहीं, परंतु सिक्खों ने चाबियां लेने से इनकार कर दिया और पहले सभी गिरफ़्तार सिक्ख नेताओं की रिहाई की मांग की।

हार कर सरकार ने आखिर ११ जनवरी को गिरफ्तार किए गए सिक्ख नेताओं को रिहा करने के आदेश दे दिए। १९ जनवरी को रिहा हुए सिक्ख नेता श्री अमृतसर पहुंचे।

अंग्रेज़ सरकार ने अपना प्रतिनिधि भेजकर चाबियां श्री अकाल तख़्त साहिब के सामने बाबा खड़क सिंह को सौंप दीं।

Final

ख़बरनामा

श्री करतारपुर साहिब का रास्ता ५५०वें प्रकाश पर्व के अवसर पर सिक्ख कौम के लिए तोहफा : भाई लौंगोवाल

श्री अमृतसर : २७ नवंबर : श्री गुरु नानक देव जी के पाकिस्तान स्थित ऐतिहासिक स्थान गुरुद्वारा श्री दरबार साहिब श्री करतारपुर साहिब के रास्ते से संबंधित पाकिस्तान सरकार की तरफ से करवाए गए शिलान्यास कार्यक्रम में शामिल होने के लिए शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल पाकिस्तान गए। उनके साथ शिरोमणि गु प्र कमेटी के भूतपूर्व सदस्य जत्थेदार उदे सिंघ लौंगोवाल और सचखंड श्री हरिमंदर साहिब के अतिरिक्त मैनेजर स. राजिंदर सिंघ रूबी भी गए। अटारी सरहद से वाहगा पहुंचने पर पाकिस्तान गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के पूर्व प्रधान स. बिशन सिंघ, सिक्ख नेता स. सरबत्त सिंघ आदि के अलावा श्री ननकाणा साहिब से पहुंचे भाई राय बुलार जी के पारिवारिक सदस्य राय भट्टी ने गर्मजोशी के साथ भाई लौंगोवाल का स्वागत किया। पाकिस्तान जाने से पहले अंतर्राष्ट्रीय सरहद पर भाई लौंगोवाल ने मीडिया के साथ बातचीत करते हुए श्री करतारपुर साहिब का रास्ता खोलने संबंधी भारत-पाकिस्तान सरकार की पहुंच का स्वागत किया और रास्ता खुलने को श्री नानक देव जी के ५५० वर्षीय प्रकाश पर्व के अवसर पर सिक्ख जगत के लिए बड़ा तोहफा करार दिया। उन्होंने कहा कि यह अवसर हमारे लिए बेहद खास है और इसे गुरु साहिब की शिक्षाओं को विश्व भर में फैलाने के लिए विशेष रूप से इस्तेमाल किया जाएगा।

सिकलीगर सिक्खों की मदद के लिए शिरोमणि गु प्र कमेटी वचनबद्ध

श्री अमृतसर : ३ दिसंबर : शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने महाराष्ट्र के ज़िला परभणी के गांव बलसा में पुलिस प्रशासन द्वारा सिकलीगर सिक्खों के घर गिराए जाने और गुरुद्वारा साहिब के निशान साहिब को नुकसान पहुंचाए जाने का सख़्त नोटिस लिया है। शिरोमणि गु प्र कमेटी कार्यालय से जारी प्रेस नोट में शिरोमणि गु प्र कमेटी के प्रवक्ता स. दिलजीत सिंघ ने कहा कि सिकलीगर सिक्ख गुरु साहिब के समय से ही सिक्ख समाज का अहम अंग रहे हैं, परंतु दुख की बात है कि इससे पहले भी सिकलीगर सिक्खों को दबाया जाता रहा है। उन्होंने कहा कि ताज़ा घटना में महाराष्ट्र ज़िले के गांव बलसा में सिकलीगर सिक्खों को परेशान किए जाने की खबर है, जिसकी शिरोमणि गु प्र कमेटी सख़्त शब्दों में निंदा करती है। उन्होंने कहा कि इस मामले में शिरोमणि गु प्र कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने इस मामले की पूरी जानाकारी के लिए छत्तीसगढ़ सिक्ख मिशन के इंचार्ज की ड्यूटी लगा दी है। उन्होंने कहा कि सिकलीगर सिक्ख, जो पहले ही मुश्किल से अपना जीवन-गुज़ारा कर रहे हैं, को इस तरह तंग-परेशान कर बेघर करना ठीक नहीं है। उन्होंने कहा कि सिकलीगर सिक्खों की सुरक्षा यकीनी बनाने के लिए शिरोमणि गु प्र कमेटी के नुमाइंदे महाराष्ट्र सरकार के साथ भी संपर्क स्थापित करेंगे।

स. दिलजीत सिंघ ने बताया कि शिरोमणि गु प्र कमेटी की तरफ से देश के अलग-अलग स्थानों पर बसते सिकलीगर सिक्खों की हमेशा मदद की जाती रही है। उन्होंने बताया कि बीते वर्ष जब मध्य प्रदेश में बसते सिकलीगर सिक्खों को स्थानीय प्रशासन की तरफ से तंग-परेशान किया गया था, तो उस समय भी शिरोमणि गु प्र कमेटी ने पीड़ितों की मदद की थी। उन्होंने विस्तार देते हुए बताया कि शिरोमणि गु प्र कमेटी की तरफ से मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और आंध्रा प्रदेश के सिकलीगर सिक्ख बच्चों के स्कूलों की फीस

Final

दी जा रही है। गत वर्ष शिरोमणि गु प्र कमेटी के एक वफद ने विशाखापट्टनम जाकर ८४ बच्चों की साल भर की फीस अलग-अलग स्कूलों को दी गई, जो लगभग ८ लाख रुपए बनती है। इसके अलावा रायपुर (छत्तीसगढ़) में भी ८० बच्चों की फीस दी गई। स. दिलजीत सिंघ ने बताया कि गत वर्ष स्थानीय प्रशासन की तरफ से ४० सिकलीगर सिक्खों पर केस डाल दिए गए थे, उनकी आर्थिक सहायता भी की गई। शिरोमणि गु प्र कमेटी सिकलीगर सिक्खों का जीवन स्तर ऊंचा उठाने के लिए विशेष यत्न कर रही है। इसके अंतर्गत इंदौर में औद्योगिक प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किया जा रहा है और तकनीकी विद्या देने के लिए शिरमोणि गु प्र कमेटी की संस्थाओं में भी प्रबंध किया गया है। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गु प्र कमेटी की तरफ से सिकलीगर बच्चों की पढ़ाई की तरफ इसलिए विशेष ध्यान दिया जा रहा है कि इनकी आने वाली पीढ़ी आत्मनिर्भर होकर अपने पैरों पर खड़ी हो सके। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गु प्र कमेटी के प्रधान खुद इंदौर और आस-पास के इलाकों में जाकर आए हैं और वहां के सिक्खों को सिकलीगर सिक्खों की मदद के लिए आग्रह किया गया है। मध्य प्रदेश के कुछ इलाकों में सिलाई सेंटर खोलने का भी प्रयास किया गया है। स. दिलजीत सिंघ ने बताया कि शिरोमणि गु प्र कमेटी की तरफ से सिकलीगर सिक्खों के गुरुद्वारा साहिबान के लिए भी विशेष मदद की जाती रही है और जरूरी सामान भी मुहैण करवाया गया था। सिकलीगर सिक्खों को सचखंड श्री हरिमंदर साहिब सहित अन्य गुरु-स्थानों के दर्शन करवाने का भी समय-समय पर प्रबंध किया जाता है, जिसके लिए टिकटों, रिहायश आदि का प्रबंध प्राथमिक स्तर पर किया जाता है।

जगदीश टाइटलर सहित अन्य दोषियों को भी मिले सख़्त सज़ा : भाई लौंगोवाल

श्री अमृतसर : १७ दिसंबर : नवंबर, १९८४ ई में हुए दिल्ली सिक्ख कत्लेआम के दोषी सज्जन कुमार को दिल्ली हाईकोर्ट की तरफ से उम्र-कैद की सज़ा सुनाने का शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के प्रधान भाई गोबिंद सिंघ लौंगोवाल ने स्वागत किया है। बेशक भाई लौंगोवाल ने यह बात भी कही है कि सज्जन कुमार उम्र-कैद का नहीं, बल्कि फांसी की सज़ा का हकदार है, फिर भी न्याय-पालिका ने उसे उम्र-कैद की सज़ा देकर उसके गुनाहों को साबित कर दिया है। भाई लौंगोवाल ने कहा कि ३४ वर्ष बाद आया यह फैसला सिक्ख नसलकुशी के पीड़ितों को कुछ हद तक राहत देने वाला है, लेकिन अभी भी बहुत-से दोषी कानून की गिरफ्त से बाहर हैं। उन्होंने जगदीश टाइटलर सहित सिक्ख कत्लेआम के दूसरे दोषियों को भी कड़ी सज़ा देने की मांग की है। शिरोमणि गु प्र कमेटी के प्रधान ने कहा कि १९८४ ई में सिक्खों का कत्लेआम कांग्रेस द्वारा किया गया मानवता विरोधी काम था, जिसने समूचे विश्व को हिला कर रख दिया। उन्होंने दुख के साथ कहा कि सिक्खों की दुश्मन जमात कांग्रेस द्वारा सिक्ख कत्लेआम करवाने के बाद इसके दोषियों को जहां लगातार बचाया जाता रहा, वहीं सिक्खों को और चिढ़ाने तथा उनके ज़ख़्मों को कुरेदने के लिए जगदीश टाइटलर, सज्जन कुमार, कमल नाथ सहित अन्य अनेक दोषियों को ऊंचे पद देकर सम्मानित किया गया। उन्होंने कहा कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा सिक्ख कत्लेआम के दोषियों को सज़ा दिलाने के लिए लगातार यत्न किए जाते रहे हैं और गवाहों को माली मदद देने के साथ-साथ साधन भी मुहैया करवाए जाते रहे हैं। इसके अलावा समय-समय पर शिरोमणि गु प्र कमेटी के जनरल इजलास के दौरान सिक्ख कत्लेआम की कड़े शब्दों में निंदा भी की जाती रही है। भाई लौंगोवाल ने कहा कि भारत के प्रधानमंत्री तथा गृहमंत्री के साथ उनके द्वारा की गई पिछले समय में भेंट-वार्ता के दौरान भी उन्होंने इस मामले को उठाया था और सिक्खों को इंसाफ दिलाने की अपील की थी। शिरोमणि गु प्र कमेटी के प्रधान ने यह भी कहा कि कांग्रेस ने अपने राज्य-काल के दौरान जो ज्यादतियां सिक्ख कौम के साथ कीं, उनको सिक्ख जगत कभी भुला नहीं सकता और कांग्रेस भी इससे संबंधित सवालों की सदा जवाबदेय रहेगी।

Final